 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक
गुरमति ज्ञान

चेत-वैशाख, संवत् नानकशाही ५४७
वर्ष ८ अंक ८ अप्रैल **2015**

संपादक : सिमरजीत सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**



फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

जिनि कीती सो मंनणा को सालु जिवाहे साली ॥ धरम राइ है देवता लै गला करे दलाली ॥
सतिगुरु आखै सचा करे सा बात होवै दरहाली ॥ गुर अंगद दी दोही फिरी सचु करतै बंधि बहाली ॥
नानकु काइआ पलटु करि मलि तखतु बैठा सै डाली ॥ दरु सेवे उमति खड़ी मसकलै होइ जंगाली ॥
दरि दरवेसु खसंम दै नाइ सचै बाणी लाली ॥ बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥
लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली ॥ गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली ॥
पए कबूलु खसंम नालि जां घाल मरदी घाली ॥ माता खीवी सहु सोइ जिनि गोइ उठाली ॥३॥
(पन्ना ९६७)

गुरु-घर के रबाबी-कीर्तनिए भाई बलवंड जी तथा भाई सत्ता जी द्वारा रामकली राग में उच्चारण की गई वार की उपरोक्त पउड़ी में श्री गुरु अंगद देव जी की उपमा का गायन करते हुए (भाई बलवंड जी का) फरमान है कि श्री गुरु अंगद देव जी ने विनम्र होकर सतिगुरु (श्री गुरु नानक देव जी) का हुक्म मानने की कमाई की। वे आदरणीय हैं, सम्मान के हकदार हैं। फिर प्रश्न भी किया है कि उनसे श्रेष्ठ और कौन है ? 'जिवाहे' (जिवांह, तटीय क्षेत्र में उगने वाली घास) या 'साली' (शाली, धान, जो निचली जगह पर होता है)? कहने से तात्पर्य कि साली, धान ही श्रेष्ठ है, क्योंकि वो निम्न क्षेत्र में होता है। निम्न अवस्था में रहकर, गुरु-हुक्म की पालना करते रहने से ही सम्मान पाया जा सकता है। श्री गुरु अंगद देव जी धर्म के राजा हो गए हैं। वे जनसाधारण की विनती सुनकर उनका परमात्मा के साथ मिलन करवाने में मध्यस्थ की भूमिका निभा रहे हैं। श्री गुरु अंगद देव जी जो वचन बोलते हैं परमात्मा उसे पूर्ण कर देते हैं; (वे जैसा कहते हैं) वैसा तुरंत हो जाता है। गुरु जी की प्रशंसा की धूम हर तरफ हो गई है; परमात्मा की कृपा से उनकी प्रशंसा स्थायी रूप से कायम हो गई है। श्री गुरु नानक देव जी की ज्योति ही श्री गुरु अंगद देव जी में विद्यमान है, केवल शरीर ही बदला है। सैकड़ों सिक्खों वाले गुरु जी गरगद्दी पर शोभायमान हैं। गुरु जी के दर पर संगत प्रेम से सेवा कर रही है और अपनी आत्मा को इस प्रकार पवित्र कर रही है जैसे जंग लगी धातु मसकले से साफ हो जाती है। गुरु (श्री गुरु नानक देव जी) के दर पर वे (श्री गुरु अंगद देव जी) नाम-सिमरन की दात के याचक हैं। परमात्मा के नाम-सिमरन की बरकत से उनके मुख पर तेज (नूर) है। (श्री गुरु अंगद देव जी की सुपत्नी) माता खीवी जी भी बड़े भले इंसान हैं। उनकी (ममतामयी) छांव घने पत्तों वाले वृक्ष की भांति है अर्थात् उनका संग प्राप्त होने पर हृदय में शांति पैदा होती है। गुरु जी सतसंग में आत्मिक जीवन की तृप्ति हेतु नाम-रस बांट रहे हैं और माता खीवी जी शारीरिक तृप्ति हेतु लंगर में घी वाली खीर का प्रसाद बांट रहे हैं। गुरु-घर में आकर गुरसिक्खों के मुख (चेहरे) खिले हुए हैं, जबकि बेमुख लोगों के चेहरे ऐसे मुर्झाए हुए हैं जैसे धान का सूखा हुआ पौधा, जिसमें से दाने झाड़ लिए जाते हैं। श्री गुरु अंगद देव जी के कठिन (मर्दों वाले) संघर्ष से ही वे सतिगुरु (श्री गुरु नानक देव जी) के दर पर स्वीकार किए गए हैं। श्री गुरु अंगद देव जी माता खीवी जी के (महान) पति हैं जिन्होंने धरती का भार उठा लिया है अर्थात् धरती पर रहते मनुष्यों के दुखों-कष्टों का वे निवारण कर रहे हैं।





प्रगटिओ खालसा प्रमातम की मौज

खालसा अरबी भाषा का शब्द है। इस शब्द से तात्पर्य है-- वह ज़मीन-जायदाद, जिसका सम्बंध सीधा बादशाह के साथ है। खालसा भी सीधा अकाल पुरख वाहिगुरु के साथ संबंधित है। खालसा स्वतंत्र है। यह स्वतंत्रता हलतमुखी भी है तथा पलतमुखी भी। खालसा अपने पांच ककारी पहरावे से विलक्षण पहचान रखता है। अपने खालसाई स्वरूप को बनाए रखने के लिए हर सिक्ख प्रतिदिन अकाल पुरख के समक्ष अरदास करके सिक्खी दान, केश दान तथा रहित दान मांगता है। गुरु साहिब द्वारा बख़्शिश किए पांच ककारी पहरावे को प्यार करना और इनके आदर्शों के अनुसार जीवन जीना गुरमति-भक्ति के लिए अति ज़रूरी है। धैर्यवान सिक्खों ने समाज-सृजना में जो योगदान दिया है वह इतिहास में विशेष स्थान रखता है।

गुरु साहिबान ने जिस समाज को सुधारने का इंकलाबी बीड़ा उठाया था वो एक तरफ मुगल हकूमत की गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ था और दूसरी तरफ उस पर ब्राह्मणवाद ने बुरी तरह से पकड़ बनाई हुई थी। श्री गुरु नानक देव जी तथा उनके उत्तराधिकारियों ने जहां समय के हकूमती जब्र के खिलाफ़ आवाज़ बुलंद की वहीं समाज में प्रचलित कुरीतियों को खत्म करने के अनेकों यत्न भी किए।

निर्बल, दबी-कुचली, श्वासहीन तथा गुलामी की आदी हो चुकी भारतीय जनता में नई रूह फूंकने के लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा पांच ककारी पहरावे की बख़्शिश की गई। लोगों की हालत यहां तक गिर चुकी थी कि वे रोटी-बेटी की रक्षा तक नहीं कर सकते थे। वैसाखी वाले दिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा की गई खालसे की साजना ने भारतीय समाज में नया विश्वास पैदा कर दिया, नये इंकलाब की सृजना हुई। खालसा पंथ की साजना करके गुरु जी द्वारा यह ताड़ना की गई :

निशाने सिक्खी ईं पंज हरफ़ काफ़।
हरगिज़ ना बाशद ईं पंज मुआफ़।

सिक्खी की निशानी पांच ककारी पहरावा है। जो भी सिक्ख खंडे-बाटे की पाहुल प्राप्त करता है वह इस पहरावे का पक्का धारक बनता है। ऐसे पहरावे के धारक से जनता आशा करती है कि वह जब्र-ज़ुल्म के विरुद्ध लड़ने वाला, सदाचारी जीवन जीने वाला तथा सांसारिक लोभ से ऊपर उठा हुआ हो। जनता के इस विश्वास को बनाए रखने के लिए इस पहरावे के धारक का पवित्र धर्म-कर्त्तव्य बन जाता है कि उसका सिर चाहे चला जाए मगर वो गुरु से बेमुख न हो। इस गुरसिक्खी पहरावे को कायम रखने के लिए सिक्खों ने खुर्पी से खोपरी उतरवा ली, चरखड़ियों पर चढ़ गए, तन के टुकड़े-टुकड़े करवा लिए। ऐसे गुरसिक्खों की कुर्बानियों से सिक्ख इतिहास भरा पड़ा है।

पांच ककारी पहरावे के धारक बनने तथा रहित की परिपक्वता के लिए गुरमति सिद्धांतों की जानकारी तथा स्पष्टता अति आवश्यक है। वास्तव में गुरसिक्ख वाली जीवन-जाच बचपन से ही बनानी शुरू कर देनी चाहिए। इस कार्य के प्रति आरंभ से ही बच्चों को गुरमति रहित के साथ जोड़ना ज़रूरी है। इस कार्य की सफलता के लिए प्रत्येक गुरसिक्ख को व्यक्तिगत रूप से तथा प्रत्येक संस्था को संस्थागत रूप से यत्नशील होना चाहिए। सिक्ख कौम आरंभ से ही अति नाजुक दौर से गुज़रती आई है तथा विकसित होती गई है। हर मुश्किल के समय कौमी रंगत में निखार आया है। आने वाला समय भी सिक्खों के लिए कोई ज्यादा सुखमयी प्रतीत नहीं हो रहा। हमें अपने मन को बलवान बनाने के लिए गुरबाणी के साथ जुड़ना चाहिए। कौमी विरासत को कायम रखने के लिए प्रत्येक सिक्ख के लिए रहित में परिपक्वता लानी अति आवश्यक है। 

फार्म-४, नियम-८

१.	प्रकाशित करने का स्थान	:	कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
२.	प्रकाशित करने का समय	:	प्रत्येक माह की पहली तारीख
३.	मुद्रक का नाम	:	स. दलमेघ सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
४.	प्रकाशक का नाम	:	स. दलमेघ सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
५.	संपादक का नाम	:	स. सिमरजीत सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	संपादक, गुरमति ज्ञान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
६.	मालिक	:	शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर

मैं सिमरजीत सिंघ घोषणा करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी अनुसार पूर्णत: सही है।

तारीख-०१/०४/२०१५

हस्ताक्षर/-
(सिमरजीत सिंघ)
संपादक, गुरमति ज्ञान।

श्री गुरु अंगद देव जी

*-स. गुरदीप सिंघ**

दैविक गुणों से भरपूर, प्रभावशाली और महान व्यक्तित्व वाले श्री गुरु अंगद देव जी के बारे में भट्ट कल सहार जी ने फरमान किया है :

अमिअ द्रिसटि सुभ करै हरै अघ पाप सकल मल ॥
काम क्रोध अरु लोभ मोह वसि करै सभै बल ॥
सदा सुखु मनि वसै दुखु संसारह खोवै ॥
गुरु नव निधि दरीआउ जनम हम कालख धोवै ॥
सु कहु टल गुरु सेवीऐ अहिनिसि सहजि सुभाइ ॥
दरसनि परसिऐ गुरू कै जनम मरण दुखु जाइ ॥
(पन्ना १३९२)

तात्पर्य-- श्री गुरु अंगद देव जी जिस मनुष्य पर अपनी अमृतमयी दृष्टि डालते हैं, उसके सभी प्रकार के पाप-विकार आदि दूर हो जाते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार सभी उसके वशीभूत हो जाते हैं, मन में सदा कायम रहने वाला सुख बस जाता है और सांसारिक दुख खत्म हो जाते हैं। भट्ट कल सहार जी के अनुसार ऐसे गुरु की आत्मिक अडोलता और श्रद्धा-भावना से सेवा करनी चाहिए क्योंकि उनके दर्शन-मात्र से ही जन्म-मरण के दुख दूर हो जाते हैं।

ऐसे महान सतिगुरु श्री गुरु अंगद देव जी का जन्म ५ वैशाख, संवत् १५६१ तद्नुसर ३१ मार्च, सन् १५०४ को ज़िला श्री मुक्तसर साहिब के गांव सराय नागा (उस समय इस गांव को मत्ते दी सरां (ज़िला फिरोज़पुर) के नाम से जाना जाता था) में पिता भाई फेरू मल जी और मां माता दइआ कौर जी के घर हुआ। माता-पिता ने आपका नाम 'लहिणा' रखा। भाई फेरू मल जी फारसी के अच्छे विद्वान थे और हिसाब तथा बहीखाता के माहिर थे। वे फिरोज़पुर के चौधरी तख़्त मल के यहां मुंशी का काम करते थे। भाई लहिणा जी के जन्म के कुछ समय बाद भाई फेरू मल जी नौकरी छोड़कर गांव संघर में आ गए तथा गांव 'हरी के पत्तण' में दुकानदारी शुरू की। कुछ समय बाद खडूर साहिब आ गए। वहां पर दुकानदारी में भाई लहिणा जी भी हाथ बंटाने लगे। खडूर साहिब में आपकी बुआ बीबी विराई जी रहती थीं। भाई लहिणा जी का शुभ विवाह खडूर साहिब से दो मील की दूरी पर गांव संघर के साहूकार भाई देवी चंद की सुपुत्री माता खीवी जी के साथ हुआ। आपके घर दो सुपुत्र-- श्री दासू जी तथा श्री दातू जी और दो सुपुत्रियां-- बीबी अमरो जी और बीबी अनोखी जी ने जन्म लिया।

भाई फेरू मल जी देवी के पुजारी थे और हर वर्ष अपने आस-पास के इलाके के लोगों को साथ लेकर देवी के दर्शन करने जाते थे। भाई लहिणा जी भी उनके साथ जाते थे। सन् १५२६ में भाई फेरू मल जी अकाल चलाना कर गए। तब से देवी के दर्शन के लिए जत्था लेकर जाना भाई लहिणा जी की ज़िम्मेदारी हो गई। एक दिन सुबह के समय भाई जोध जी के मुख

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; फोन : ९८८८१२६६९०*

से श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित 'आसा की वार' बाणी का पाठ सुना :

जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥
जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥
मंदा मूलि न कीचई दे लंमी नदरि निहालीऐ ॥
जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥
किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥ *(पन्ना ४७४)*

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी को सुनकर भाई लहिणा जी की अंदरूनी चेतना हिल गई और उनके मन में श्री गुरु नानक देव जी के दर्शन करने की इच्छा तीव्र हो गई। अक्तूबर-नवंबर, १५३२ ई में जब आप देवी-भक्तों के साथ जम्मू की तरफ जाते हुए रास्ते में करतारपुर के पास पहुंचे तो आप उनसे अलग होकर करतारपुर की तरफ श्री गुरु नानक देव जी के दर्शन करने के लिए चल पड़े। भाई लहिणा जी श्री गुरु नानक देव जी के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने गुरु जी के पास ही रहने का मन बना लिया।

भाई लहिणा जी लगभग सात साल (१५३२ से १५३९ ई तक) श्री गुरु नानक देव जी की सेवा में रहे। भाई लहिणा जी गुरु जी के बताए मार्ग पर चलने के लिए हर समय तैयार रहते थे। वे अनेक प्रकार की परीक्षाओं एवं हर प्रकार के हुक्म की पालना करने में कामयाब रहे। श्री गुरु नानक देव जी ने उन्हें जो भी काम करने को कहा उसे वे सहर्ष करते रहे। भाई लहिणा जी को पूरी तरह से योग्य जानकर, 'अंगद' नाम देकर श्री गुरु नानक देव जी ने १७ आषाढ़, संवत् १५९६ को सिक्ख संगत की मौजूदगी में गुरुतागद्दी सौंप दी। श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी बाणी के साथ अन्य एकत्रित की हुई बाणी का संग्रह भी श्री गुरु अंगद देव जी को सौंप दिया। इस प्रकार श्री गुरु नानक देव जी के उत्तराधिकारी के रूप में श्री गुरु अंगद देव जी सिक्ख पंथ के दूसरे गुरु के रूप में प्रतिष्ठित हुए :

थापिआ लहिणा जींवदे गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ।
जोती जोति मिलाइ कै सतिगुर नानकि रूपु वटाइआ।
लखि न कोई सकई आचरजे आचरजु दिखाइआ।
काइआ पलटि सरूपु बणाइआ ॥ *(वार १:४५)*

श्री गुरु अंगद देव जी ने खडूर साहिब को अपना प्रचार-केंद्र बनाया। वे वहां संगत को गुरमति और बाणी के साथ जोड़ने का प्रयास करने लगे।

लंगर-प्रथा : जात-पात के भेदभाव को खत्म करने के लिए आपने संगत और पंगत (लंगर) की मर्यादा को पूर्ण दृढ़ता प्रदान की। लंगर को सही ढंग से चलाने में आपने माता खीवी जी को सेवा में लगाया। गुरु जी आत्मिक कल्याण के लिए संगत में गुरु-शबद का लंगर बांटते और माता खीवी जी शारीरिक तृप्ति के लिए पौष्टिक पदार्थों का लंगर पंगत में बांटते। रबाबी भाई सत्ता जी और भाई बलवंड जी ने माता खीवी जी के इस सेवा श्रम के बारे में अपनी वार में फरमान किया है :

बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥
लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली ॥
(पन्ना ९६७)

मल्ल-अखाड़े : स्वस्थ मन के लिए स्वस्थ शरीर की ज़रूरत है। शारीरिक रोगों को दूर भगाने के लिए कसरत अहम भूमिका निभाती है। गुरु जी ने मल्ल-अखाड़े स्थापित किए ताकि मानसिक

रूप से गुरमति वाला जीवन पाने के साथ-साथ संगत शारीरिक रूप से भी स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सके।

हुमायूं का अहंकार तोड़ना : सन् १५४० में शेरशाह सूरी से हार खाकर हुमायूं आगरा की तरफ से पंजाब की ओर भाग निकला और जाते-जाते गुरु जी के पास खडूर साहिब चला आया। गुरु जी उस समय पाठशाला में बच्चों को पढ़ा रहे थे। वे हुमायूं की तरफ ध्यान न दे सके। हुमायूं ने इसे अपना अपमान समझते हुए गुरु जी को संबोधित होते हुए गुस्से में म्यान से तलवार निकालनी चाही। गुरु जी ने बड़ी निर्भयता से कहा, "यह तलवार शेरशाह सूरी के साथ युद्ध के समय कहां थी ?" इतना सुनते ही हुमायूं लज्जित हो गया और उसका अहंकार टूट गया। उसने अपनी गलती के लिए गुरु जी से क्षमा मांगी।

पंजाबी भाषा और गुरमुखी लिपि का प्रचार : बाणी की उचित ढंग से संभाल की जाए, इसके लिए एक स्पष्ट लिपि की ज़रूरत थी और श्री गुरु अंगद देव जी ने पंजाबी भाषा को शुद्ध रूप में लिखने के लिए गुरमुखी लिपि ईज़ाद कर बच्चों के लिए बाल-बोध (काइदा) इसी लिपि में लिखवाए। श्री गुरु नानक देव जी तथा भक्त साहिबान की बाणी को गुरमुखी लिपि में लिखवाकर पोथियां बनवाईं और संगत में पहुंचाईं।

बाबा अमरदास जी से मिलाप : बाबा अमरदास जी बासरके गांव में निवास करते थे और तीर्थ-यात्रा के प्रेमी थे। २१ बार हरिद्वार की यात्रा कर चुके थे। अंतिम यात्रा के दौरान उन्हें पता चला कि आध्यात्मिक कल्याण के लिए 'गुरु' धारण करना ज़रूरी है। अपने भतीजे की पत्नी बीबी अमरो जी (श्री गुरु अंगद देव जी की सुपुत्री) के मुख से गुरबाणी का पाठ सुन कर मन को शांति मिली। उन्होंने इस बाणी के उच्चारणकर्ता को गुरु धारण करने का मन बनाया। आप श्री गुरु अंगद देव जी की शरण में आए और उनके पास ही उनकी संगत और सेवा में रहकर उनके ही होकर रह गए।

गोइंदा नामक खत्री (क्षत्रिय) ने श्री गुरु अंगद देव जी के पास विनती की कि दरिया ब्यास के किनारे उसकी ज़मीन पर नया नगर बसाने की कृपा की जाए। गुरु जी ने बाबा अमरदास जी को आदेश दिया कि वहां नगर बसाया जाए। सन् १५४६ में नया नगर बसाने की आरंभता की गई। यह नगर आजकल गोइंदवाल साहिब के नाम से प्रसिद्ध है।

श्री गुरु नानक देव जी की तरह आपने गुरगद्दी योग्य हाथों में सौंपी। बाबा अमरदास जी की अनथक सेवा को देखकर श्री गुरु अंगद देव जी ने बाबा अमरदास जी को गुरगद्दी की जिम्मेदारी सौंप दी। श्री गुरु अंगद देव जी ने अपनी बाणी सहित सारी बाणी का खज़ाना श्री गुरु अमरदास जी को सौंप दिया। गुरिआई की जिम्मेदारी श्री गुरु अमरदास जी को सौंपकर ३ वैशाख, संवत् १६०९ तद्नुसार २९ मार्च, १५५२ ई को आप खडूर साहिब में ज्योति-जोत समा गए।

श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा उच्चरित बाणी के ६३ सलोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सुशोभित हैं। इन सलोकों में संपूर्ण मानव-जीवन का सार समाया हुआ है। श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना के समय इन ६३ सलोकों को अन्य गुरु साहिबान की ९ वारों में उचित स्थानों पर दर्ज कर दिया।

गुरु जी की विचारधारा : गुरु ही आत्मिक-प्रकाश का स्रोत है। गुरु के बिना जीवन-मार्ग में अंधेरा ही अंधेरा है। जब गुरु मनुष्य के मन

के कपाट खोलकर मन में आत्मिक ज्ञान का प्रकाश करता है तो मनुष्य माया के प्रभाव से मुक्त हो जाता है :

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥
(पन्ना ४६३)

अहंकार जीव को प्रभु से दूर रखता है। गुरु के शबद की कमाई से अहंकार की दीवार टूट जाती है और जीव का प्रभु से मिलाप हो जाता है :

हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ॥
हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥
नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥
(पन्ना ४६६)

सांसारिक रूप में मिले मान-सम्मान से उपजा अहंकार जीव को प्रभु-नाम से दूर रखता है :

नानक दुनीआ कीआं वडिआईआं अगी सेती जालि ॥
एनी जलीईं नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥ *(पन्ना १२९०)*

सच्चा प्रेमी (भक्त) वही है जो अपने प्रभु का दामन कभी नहीं छोड़ता और प्रभु की रज़ा में सदैव प्रसन्न रहता है :

एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥
नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ ॥
चंगै चंगा करि मंने मंदै मंदा होइ ॥
आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ॥
(पन्ना ४७४)

जो मनुष्य प्रभु से प्यार करते हुए उसे अपने हृदय में बसा लेते हैं वे सदा बसंत की तरह खिले रहते हैं। प्रभु से दूर रहने वाले जीव दिन-रात माया एवं तृष्णा की आग में जलते रहते हैं :

नानक तिना बसंतु है जिन्ह घरि वसिआ कंतु ॥
जिन के कंत दिसापुरी से अहिनिसि फिरहि जलंत ॥ *(पन्ना ७९१)*

मनुष्य को संसार के लोगों या किसी अन्य सहारे के स्थान पर प्रभु-नाम की ही ओट लेनी चाहिए। प्रभु के आगे ही अरदास करनी चाहिए क्योंकि प्रभु सबकी मनोकामना पूरी करने वाला है। प्रभु सर्व-कला-समर्थ है :

आपे जाणै करे आपि आपे आणै रासि ॥
तिसै अगै नानका खलिइ कीचै अरदासि ॥
(पन्ना १०९३)

सांसारिक धन-पदार्थ नाशवान हैं। मनुष्य इन पदार्थों को एकत्रित करने में ही अपना जीवन लगा देता है। जिस प्रभु के प्यारे को जीवन की क्षण-भंगुरता का एहसास है वह सांसारिक धन-पदार्थ इकट्ठे नहीं करता :

राति कारणि धनु संचीऐ भलके चलणु होइ ॥
नानक नालि न चलई फिरि पछुतावा होइ ॥
(पन्ना ७८७)

जीव को प्रभु-भक्ति को छोड़कर मात्र अपनी जीविका के लिए ही संचय करने की चिंता नहीं करनी चाहिए। यह चिंता परमात्मा खुद करता है। वह हर समय हर स्थान पर सबको निरंतर खुराक दे रहा है :

नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ ॥
जल महि जंत उपाइअनु तिना भि रोजी देइ ॥
(पन्ना ९५५)



महान वैयाकरण : श्री गुरु अंगद देव जी

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

दूसरे पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी ने ५ वैसाख, संवत् १५६१ वि. तद्नुसार १८ अप्रैल, सन् १५०४ ई. को पंजाब के ज़िला श्री मुकतसर साहिब के गांव सराय नागा (मत्ते दी सरां) में भाई फेरूमल जी एवं माता दइआ कौर जी (माता सभराई जी) के घर जन्म लिया। गुरु साहिब को बचपन में 'लहिणा' कहकर पुकारा जाता था। गुरु जी के परिवार का खानदानी पेशा व्यापार था। यह परिवार आर्थिक रूप से पर्याप्त समृद्ध था। संवत् १५७६ बि. तद्नुसार सन् १५१९ ई. में गुरु जी का विवाह ज़िला तरनतारन के गांव संघर के निवासी श्री देवी चंद की सुपुत्री माता खीवी जी से हुआ। कालांतर में दो सुपुत्रों-- श्री दातू जी एवं श्री दासू जी तथा दो सुपुत्रियों-- बीबी अमरो जी एवं बीबी अनोखी जी का जन्म हुआ। भाई लहिणा जी दत्तचित्त होकर व्यापार में लगे रहते और प्रभु-भजन करते हुए परिवार के लिए जीविका का उपार्जन करते।

प्रथम पातशाह से भेंट : भाई लहिणा जी देवी-भक्त थे और हर वर्ष देवी-दर्शन के लिए जाया करते थे। सन् १५३२ ई. में करतारपुर में आपको प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी के दर्शन हुए। जब भाई लहिणा जी गुरु जी से मिलने पहुंचे तो श्री गुरु नानक देव जी उस समय खेतों में से खरपतवार और घास चुगकर गट्ठर बांध रहे थे। भाई लहिणा जी को आते देखा तो कहा कि इस गट्ठर को घर लेकर चलना है। भाई लहिणा जी ने उस समय सुंदर रेशमी वस्त्र पहन रखे थे। वे वस्त्रों की परवाह किए बगैर टपकते कीचड़ वाले गट्ठर को उठाकर घर ले आये।

माता सुलक्खणी जी ने जब यह दृश्य देखा तो कहा कि "कीचड़ से भाई लहिणा जी के वस्त्र गंदे हो गये हैं।" गुरु जी ने फरमाया-- "ये कीचड़ के नहीं केसर के छींटे समझो!" प्रथम पातशाह की शख़्सियत का आप पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि आप तुरंत उनके सिक्ख बन गये। घर वापिस आये तो उनके बिना मन न लगे, तुरंत वापिस जाने का निश्चय कर लिया।

भाई लहिणा जी की सेवा : भाई लहिणा जी सन् १५३२ से १५३९ तक श्री गुरु नानक देव जी की सेवा में रहे। विनम्र एवं आज्ञाकारी सेवक के रूप में आपने ऐसी सेवा की जिसकी मिसाल मिलना मुश्किल है। खेती, लंगर, पंखा झलना, पानी ढोना. . . ऐसा कौन-सा सेवा-कार्य था जो आपने नहीं किया।

भाई लहिणा जी गुरु-आज्ञा के पालन के लिए सदा तत्पर रहते थे और बिना सोच-विचार किए आज्ञा पूरी करने में जुट जाते थे। एक बार श्री गुरु नानक देव जी का कटोरा गंदे नाले में गिर गया। गुरु जी ने अन्य सिक्खों को उस कटोरे को निकाल लाने के लिए कहा तो सभी नाक-भौं सिकोड़ने लगे परंतु भाई लहिणा जी ने आदेश मिलते ही न आव देखा न ताव, झट गंदे नाले में जा घुसे और कटोरा

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

निकाल लाये।

इसी प्रकार एक बार आधी रात के समय नदी से वस्त्र धोकर लाने की गुरु-आज्ञा मिली, तो उसी समय नदी पर जा पहुंचे और कपड़े धो लाये।

भाई लहिणा जी का विचार था कि गुरु-आज्ञा का सदैव पालन होना चाहिए। एक बार सर्दियों की ठंडी रात में श्री गुरु नानक देव जी के कमरे की दीवार ढह गई। सभी सिक्खों ने कहा कि सुबह देखा जाएगा परंतु भाई लहिणा जी गुरु जी का आदेश पाकर तुरंत उठे और दीवार बनाने में जुट गये। प्रथम पातशाह ने वह दीवार चार बार ढहवाई और चार बार बनवाई। भाई लहिणा जी दत्तचित्त कार्य में लगे रहे। किसी ने भाई लहिणा जी से पूछा कि कब तक यह दीवार बनाते-ढहाते रहोगे? भाई लहिणा जी ने शांत-भाव से उत्तर दिया कि "मेरा काम गुरु जी के आदेश का पालन करना है, दीवार बनने या न बनने से मुझे कोई मतलब नहीं।"

भाई लहिणा जी को गुरगद्दी : भाई लहिणा जी के समर्पण एवं सेवा-भाव से प्रसन्न होकर और उन्हें समस्त प्रकार से योग्य जानकर श्री गुरु नानक देव जी ने गुरगद्दी की ज़िम्मेदारी सौंपने का निर्णय लिया।

श्री गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणा जी को अपने गले से लगा लिया और कहा कि तुम मेरे ही शरीर के अंग की तरह हो, इसलिए आज से तुम्हारा नाम 'अंगद' हुआ। ज्योति-जोत समाने से पहले प्रथम पातशाह ने श्री गुरु अंगद देव जी के सामने माथा टेका और उन्हें द्वितीय पातशाह के रूप में प्रतिष्ठित किया।

महान वैयाकरण : श्री गुरु अंगद देव जी ने सिक्ख धर्म के विकास एवं प्रसार के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य किए। गुरु जी का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य था-- गुरमुखी लिपि का निर्माण। आजकल पंजाबी भाषा जिस लिपि में लिखी जाती है वह गुरमुखी लिपि है। गुरमुखी लिपि के आविष्कार का श्रेय द्वितीय पातशाह को जाता है। उस काल में पंजाबी भाषा फारसी या लहिंदी लिपि में लिखी जाती थी। ये दोनों लिपियां पंजाबी भाषा के लिए उपयुक्त नहीं थीं। अत: गुरु जी ने अपनी वैयाकरणिक प्रतिभा का प्रयोग करते हुए पंजाबी भाषा के लिए एक संपूर्ण, समर्थ एवं विशिष्ट लिपि का निर्माण किया और उसे नाम दिया-- गुरमुखी।

श्री गुरु अंगद देव जी ने विभिन्न आध्यात्मिक-सामाजिक कार्य तो किए ही, साथ ही साथ अनेक महत्त्वपूर्ण अकादमिक कार्य भी किए। गुरबाणी-संचयन एवं सिक्ख इतिहास-लेखन की परंपरा भी द्वितीय पातशाह ने ही स्थापित की। गुरु जी ने प्रथम पातशाह से प्राप्त उनकी बाणी और भिन्न-भिन्न संतों-भक्तों की संकलित बाणी का लेखन कराके सैंचियां एवं पोथियां (गुटका) तैयार करवाये।

द्वितीय पातशाह ने गुरमुखी लिपि में पठन-पाठन आरंभ कराया। गुरु जी ने नवनिर्मित गुरमुखी लिपि सिखाने के लिए पहला विद्यालय स्थापित कराया। गुरु जी स्वयं बच्चों को गुरमुखी की शिक्षा देते थे। गुरु जी ने गुरमुखी के कायदे 'बाल-बोध' भी तैयार करवाए ताकि बच्चे आसानी से गुरमुखी सीख सकें।

श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी : द्वितीय पातशाह महान् विचारक, आदर्श संगठन-कर्त्ता, उदात्त आध्यात्मिक मूल्यों से सुसज्जित व्यक्तित्व वाले थे। आपकी बाणी में आपके विचार एवं आपका उत्कृष्ट व्यक्तित्व स्पष्ट झलकता है। गुरु जी द्वारा उच्चरित ६३ सलोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं।

गुरु जी ने अपनी बाणी में अकाल पुरख के स्वरूप, जीव, माया, सृष्टि, आवागमन, नाम-सिमरन आदि विषयों का वर्णन किया है :

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा ॥
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा ॥
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा ॥
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा ॥
(पन्ना १३९)

अर्थात् बिना आंखों के देखने, बिना कानों के सुनने, बिना पैरों के चलने, बिना हाथों के कार्य करने, बिना जीभ के बोलने से अर्थात् जीवित मरने से दूसरे शब्दों में समस्त इंद्रियों को अंतरमुखी करके प्रभु के हुक्म को पहचानकर ही खसम अर्थात् अकाल पुरख से मिला जा सकता है।

गुरु जी का कथन है कि यह संसार अकाल पुरख की रचना है। वह इसी संसार रूपी कोठड़ी में निवास करता है। उसने किसी को माया में फंसा रखा है और किसी को वो इसमें से निकाल लेता है। किसी को वो मुक्ति देता है तो किसी का विनाश कर देता है। उसकी इच्छा कोई नहीं जानता। वह जिसे अपनाता है उसके हृदय में प्रकाश कर देता है :

इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥
इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥
इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु ॥
एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि ॥
नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥ (पन्ना ४६३)

प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी के प्रति गुरु जी के हृदय में असीम श्रद्धा थी। आप गुरु का महत्त्व स्पष्ट करते हुए कथन करते हैं कि अगर सौ चांद और हज़ार सूरज भी उगे हों, इतना प्रकाश होते हुए भी गुरु के बिना (अंत:करण में) घोर अंधकार ही रहता है :

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥
(पन्ना ४६३)

द्वितीय पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी अपने गुरु श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रदत्त कार्य को और उन्नति प्रदान करके, भविष्य की जिम्मेदारी श्री गुरु अमरदास जी को सौंप, सन् १५५२ ई में श्री खडूर साहिब में ज्योति-जोत समा गये। 

कविता

हम भूलनहार

हम भूलनहार भूलाने।
जीवन-नैया भंवर मंझाने।
लघु मानस लघु ही साधना,
लघुता लाग मरते मिट जाने।
सत्य-मार्ग की सुध नाही,
बिन सुधी जीवन-ज्योति जलाने।
लोकाचार, खाना, पीना, सोना,
बिना डरे मोह-लोभ लोभाने।
मन की भटकना भटकाती,
मन होते सोच-विहीन वीराने।
कीजे कृपा-निधि कृपा-निधान,
जीवन भंवर से पार पराने।
शबद-बोध का दीजिए आधारा,
जप-जापन आराधन दृढ़ाने।

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, फोन : ९४१७१-७५८४६

श्री गुरु अंगद देव जी की शैक्षणिक देन

-डॉ. अमृत कौर*

सिक्ख धर्म के प्रवर्त्तक श्री गुरु नानक देव जी महान दार्शनिक और शिक्षा शास्त्री थे। उन्होंने अज्ञानता के अंधेरे में भटकती जनता के मनों में ज्ञान की ज्योति प्रज्जवलित करने का प्रयास किया। उनके द्वारा प्रारंभ की गई शिक्षा की लहर को शेष गुरु साहिबान ने अपने शिक्षा संबंधी विचारों और शिक्षा-प्रसार के क्रियात्मक कार्यों द्वारा विकसित एवं प्रफुल्लित किया। श्री गुरु अंगद देव जी का उनकी इस लहर को परिपुष्ट करने में विशेष योगदान है। उनका श्री गुरु नानक देव जी की बाणी को सुरक्षित करना, गुरमुखी लिपि का निर्माण, बाणी-रचना, बाणी की पोथियों का निर्माण आदि के अलावा शारीरिक शिक्षा पर बल देना इस लहर को मज़बूती प्रदान करना था। श्री गुरु अंगद देव जी ने आध्यात्मिकता के साथ-साथ अकादमिकता स्थापित करने का भी प्रयास किया। सहज रूप से उनके व्यक्तित्व से ज्ञान-ज्योति की ऐसी किरणें फूटीं जिन्होंने सम्पूर्ण मानवता का पथ आलोकित कर दिया। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि गुरु जी शिक्षा से क्या अर्थ लेते हैं ? उनका बच्चों और बालिगों को शिक्षित करने का क्या ढंग था ? उन्होंने इस शैक्षणिक लहर को परिपक्व करने के लिए कौन-कौन से क्रियात्मक पग उठाए ? शिक्षा में आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा मनुष्य में आत्मानुभव और आत्म-प्रकाशन में सहायता करती है। *"मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥"* की भांति श्री गुरु अंगद देव जी का कहना है कि *"नानक परखे आप कउ ता पारखु जाणु ॥"* मन में अनेक शक्तियां हैं परंतु उनको विकसित वही कर सकता है जो उन्हें परखता और खोजता है। यह विकास गुरु की सहायता से संभव है :

नानक अंम्रितु मनै माहि पाईऐ गुर परसादि ॥
(पन्ना १२३८)

यह अमृत का खज़ाना, मानसिक, आध्यात्मिक शक्तियां मन में हैं परंतु विकसित गुरु-कृपा द्वारा होती हैं। ज्ञान रूपी रत्न गुरु की सहायता से जीवन में गुणों के विकास द्वारा ही प्राप्त किए जा सकते हैं :

रतना केरी गुथली रतनी खोली आइ ॥
(पन्ना ९५४)

जो ज्ञान रूपी रत्नों को विकसित नहीं करता वह ज्ञान के उजाले से वंचित हो जाता है। श्री गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणा जी से घास के गट्ठर उठवाए जो आध्यात्मिक, भौतिक और शारीरिक शक्तियों के विकास के प्रतीक हैं अर्थात् वास्तविक शिक्षा आध्यात्मिक रूप से उन्नत, भौतिक रूप से सुखी, संपन्न और शारीरिक रूप से बलवान बनाती है। श्री गुरु अंगद देव जी के अनुसार शिक्षा का अंतिम उद्देश्य भारतीय परंपरा के अनुसार प्रभु-प्राप्ति या आत्मानुभूति है :

निहफलं तसि जनमसि जावतु ब्रहम न बिंदते ॥
(पन्ना १४८)

पंजाबी भाषा के विकास में श्री गुरु अंगद देव जी का विशेष योगदान है। गुरु जी ने धर्मशालाओं के साथ संलग्न पाठशालाओं में शिक्षा का माध्यम मातृ-भाषा पंजाबी को बनाया।

*१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०४ (पंजाब), फोन : ९८१५१-०९९५७

उन्हें गुरमुखी वर्णमाला का जन्म-दाता कहा जाता है। ज्ञानी गिआन सिंघ द्वारा रचित 'पंथ प्रकाश' के अनुसार :

अखर रच के गुरमुखी फिर सिखन पढ़ाए।
गुर की बाणी और कथा इनमैं लिखवाए।

श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित 'पटी' बाणी में से पैंतीस अक्षर लेकर और बाकी लिपिओं में से कुछ अक्षर लेकर गुरमुखी लिपि का निर्माण किया। भाषा को परिपक्व और परिपुष्ट बनाने के लिए भिन्न-भिन्न अक्षरों के साथ अलग-अलग ध्वनियों को प्रमाणिक रूप से निश्चित किया। 'ट्रांसफारमेशन ऑफ सिखिज्म' के रचयिता डॉ. गोकुल चंद नारंग के अनुसार, "पंजाबी भाषा के रूप में श्री गुरु अंगद देव जी ने ऐसा हथियार तैयार किया जो इतना समर्थ सिद्ध हुआ जिसकी किसी ने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी।" श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी बाणी सहित भक्त कबीर जी, शेख़ फरीद जी आदि भक्त साहिबान की बाणी की पोथी श्री गुरु अंगद देव जी को प्रदान की। सारी बाणी को इकट्ठा कर पोथियों के रूप में लिखने की शुरूआत करने का श्रेय आपको जाता है। उन्होंने सिक्खों को बाणी की प्रतियां तैयार करने को कहा और हस्तलिखित पोथियों को सिक्खों के धर्म-प्रचार के केंद्रों में भेजना शुरू किया। गुरबाणी की पोथियों का निर्माण कर संगत में बांटना सिक्ख धर्म में परम सौभाग्य समझा जाता है। श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा प्रारंभ की गई यह परंपरा अब भी चली आ रही है। उस समय धार्मिक ग्रंथ संस्कृत में रचित होने के कारण साधारण जनता की पढ़ने की पहुंच से बाहर थे। गुरमुखी लिपि द्वारा सरल रूप से मातृ-भाषा में रचित बाणी को समझकर अपने जीवन में ढालना साधारण जनता के लिए सहज हो गया। श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी की अनेक उक्तियां कहावतों का रूप धारण कर साधारण लोगों के नैतिक निर्माण में सहायक सिद्ध होने लगीं। उदाहरणस्वरूप कुछ पंक्तियां प्रस्तुत की जा रही हैं :

-हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥
(पन्ना ४६६)

-नानक चिंता मत करहु चिंता तिस ही हेइ ॥
(पन्ना ९५५)

-जिन गुणु पलै नानका माणक वणजहि सेइ ॥
(पन्ना ९५४)

-नानक तिना बसंतु है जिन्ह घरि वसिआ कंतु ॥
(पन्ना ७९१)

-घले आवहि नानका सदे उठी जाहि ॥
(पन्ना १२३९)

श्री गुरु अंगद देव जी बच्चों को शिक्षा प्रदान करते हुए उनकी मानसिक अवस्था को सदैव ध्यान में रखते थे। गुरु जी बच्चों को उनके स्वभाव के अनुसार शिक्षा देते और शारीरिक रूप से बलवान बनाते थे। शारीरिक खेलों का आयोजन करके नैतिक निर्माण के लिए उन्हें शिक्षाप्रद साखियां सुनाते। श्री गुरु नानक देव जी की जीवन-साखियों के द्वारा बच्चों के नैतिक, चारित्रिक, धार्मिक विकास का प्रयास किया जाता। क्रीड़ा-विधि द्वारा बच्चों को धार्मिक, सामाजिक, नैतिक शिक्षा प्रदान करने के लिए गुरु जी विशेष रूप से प्रसिद्ध थे। बादशाह हुमायूं जब गुरु जी के दर्शन के लिए आया तब भी गुरु जी बच्चों को पढ़ाने आदि में निमग्न थे।

डॉ. लैटिनक के अनुसार, "श्री गुरु अंगद देव जी ने बच्चों के लिए प्रथम बाल-बोध लिखा।" श्री गुरु अंगद देव जी सिक्खों के शारीरिक स्वास्थ्य पर विशेष बल देते थे। यही बात आगे चलकर शारीरिक शिक्षा के रूप में विकसित हुई। गुरु जी सिक्खों के शारीरिक स्वास्थ्य को और भी बढ़िया बनाने के लिए उनकी कुश्तियां करवाया करते थे :

पहलवान बुलाई अखार परे।

सतिगुरु प्रसन्न होई तिह देखे।
जीत हार समसरि कर लेखे।
(महिमा प्रकाश, साखी ३)

गुरु जी खेल में जीत-हार को समदृष्टि से स्वीकार करने की शिक्षा भी देते। इसके लिए उन्होंने मल्ल अखाड़ों की स्थापना की। उनके द्वारा प्रारंभ की गई खेलों एवं कुश्तियों की यह परंपरा आगे चलकर सिक्खों में से मज़बूत शरीर वाली फौज के निर्माण में सफल हुई। शारीरिक एवं मानसिक शिक्षा के साथ-साथ गुरु जी द्वारा मेहनत से जीविका-अर्जन पर भी बल दिया जाने लगा। संगत से प्राप्त चढ़ावे को गुरु जी ने कभी भी अपनी सुविधा के लिए प्रयोग नहीं किया :

वाणु वटि करन गुज़रान।
बिना किरत अपणी धान बिगाना ना खाणु।
(बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का)

बीबी अमरो जी के मुख से श्री गुरु अमरदास जी द्वारा बाणी सुनकर गुरु-घर की ओर आकर्षित होने वाली घटना इस बात को स्पष्ट करती है कि उस समय स्त्री-शिक्षा की ओर भी ध्यान दिया जाने लगा था। शिक्षित होकर स्त्रियां बाणी के पढ़ने एवं गायन के क्षेत्र में भी आगे बढ़ रही थीं। स्त्रियों को भी शिक्षा के क्षेत्र में अवसर प्रदान करना गुरु जी का सराहनीय कदम था।

श्री गुरु अंगद देव जी ने सामाजिक चेतना और सामाजिक संगठन के लिए संगत के साथ पंगत (लंगर) की प्रथा को नियमित रूप प्रदान किया। गुरु जी स्वयं भी पंगत में बैठकर लंगर छकते। निष्काम सेवा-भावना का जन्म हुआ। संगत की सेवा को परम सौभाग्य समझा जाने लगा। साधसंगत के बाद अरदास करने की परंपरा शुरू की :

तिसै अगै नानका खलिइ कीचै अरदासि ॥
(पन्ना १०९३)

धार्मिक, नैतिक शिक्षा द्वारा चरित्र-निर्माण पर बल भारतीय शिक्षा-परंपरा का अभिन्न अंग रहा है। जीवन में उच्च गुणों और उच्च नैतिक मूल्यों का विकास मानव की एक ऐसी आध्यात्मिक संपत्ति है जिसके द्वारा वह नैतिक, मानसिक और शारीरिक बुलंदियों का स्पर्श प्राप्त कर सकता है। श्री गुरु अंगद देव जी अच्छे चरित्र-निर्माण के लिए जीवन में उच्च गुणों के विकास और अनुशासनबद्ध जीवन को आवश्यक समझते हैं :

सेव कीती संतोखीईं जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥
ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ ॥
ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥
तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥
वडिआई वडा पाइआ ॥ (पन्ना ४६६)

जीवन में उच्च गुणों के विकास द्वारा ही परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है। जिनके आंचल में गुण होते हैं वही माणक रूपी रत्नों का व्यापार कर सकते हैं :

जिन गुणु पलै नानका माणक वणजहि सेइ ॥
(पन्ना ९५४)

यदि किए गए कर्मों का फल आवश्यक मिलता है तो बुरे कर्म क्यों किए जाएं ?

जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ (पन्ना ४७४)

शिक्षा के द्वारा शिष्य के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता है। वास्तविक शिक्षा वह है जो शिष्य को आध्यात्मिक रूप से महान, मानसिक रूप से ज्ञानवान, नैतिक-चारित्रिक रूप से सुदृढ़, शारीरिक रूप से सबल और स्वस्थ बनाती है; सामाजिक निर्माण और कल्याण के लिए प्रेरित करती है। श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा प्रदान किया शिक्षा-दर्शन इस कसौटी पर खरा उतरता है।



माता खीवी जी का सेवा-भाव

-*डॉ. नवरत्न कपूर**

जन्म और विवाह : दूसरे सिक्ख गुरु श्री गुरु अंगद देव जी की धर्म-पत्नी माता खीवी जी का जन्म १५ मई, सन् १५०६ ई को 'संघर' (ज़िला तरनतारन) नामक गांव में हुआ था। इनकी माता का नाम माता करम देवी तथा पिता का नाम श्री देवी चंद था।[१] माता खीवी जी का विवाह श्री गुरु अंगद देव जी के साथ सन् १५१९ ई में हुआ, जो कि उनसे अवस्था में लगभग दो वर्ष बड़े थे। गुरु साहिब से माता खीवी जी का वैवाहिक संबंध मत्ते दी सरां (सराय नागा), ज़िला श्री मुकतसर साहिब के चौधरी श्री तख़्त मल की सुपुत्री माई विराई ने करवाया था। माई विराई का ससुराल खडूर साहिब (ज़िला तरनतारन) में था।[२] श्री गुरु अंगद देव जी के पिता भाई फेरू मल जी ने श्री गुरु नानक देव जी की अत्यंत श्रद्धालु, अपनी धर्म-बहन माई विराई जी के सुझाव को एकदम स्वीकार कर लिया। माता खीवी जी के पिता गांव संघर में साहूकारी करते थे और बड़े भद्र पुरुष थे।

इस विवाह से कुछ समय पश्चात हालातवश भाई फेरू मल जी परिवार सहित अपना पैतृक गांव मत्ते दी सरां छोड़कर संघर गांव में आ बसे और उसके समीपस्थ हरी के पत्तण नामक कसबे में अपनी दुकान चलाने लगे। यह कसबा संघर से लगभग पांच किलोमीटर की दूरी पर था। सन् १५२६ में भाई फेरू मल जी का देहावसान हो गया। फलत: सारा व्यापारिक बोझ श्री गुरु अंगद देव जी के कंधों पर आ पड़ा। उन्होंने अपनी सुपत्नी माता खीवी जी की सलाह से हरी के पत्तण वाली दुकान बंद करके खडूर साहिब में अपना व्यापारिक कार्य आरंभ कर दिया।

संघर्षमय जीवन और गुरु-सेवा : बचपन से ही श्री गुरु अंगद देव जी अपने पिता जी के साथ हर साल ज्वालामुखी देवी-दर्शन के लिए जाते थे और यह क्रम सन् १५३२ तक बना रहा, जबकि वे खडूर साहिब में आकर अपना व्यापारिक कार्य करने लगे थे। श्री गुरु नानक देव जी के परम सेवक भाई जोध जी के मुख से श्री गुरु नानक देव जी की बाणी का रसीला पाठ सुनकर वे गुरु साहिब के दर्शनार्थ करतारपुर पहुंच गए और उनसे इतने प्रभावित हुए कि उनका मन वापिस लौटने का न हुआ। सन् १५३२ से सन् १५३९ तक वे श्री गुरु नानक देव जी की सेवा करते रहते और कभी-कभार करतारपुर से खडूर साहिब आकर परिवार की सुध-बुध भी लेते रहे। इस संबंध में किसी विदुषी का कथन है :-

"बहुत-से इतिहासकार इस बारे में एकमत हैं कि माता खीवी जी के पति सन् १५३२ से सन् १५३९ तक करतारपुर में रहे। यह समय माता खीवी जी के तप-त्याग का समय था। बाल-बच्चे छोटे, बुजुर्ग घर में थे नहीं, पति घर से बाहर। उन्होंने संयम एवं शांत स्वभाव से जीवन-यापन किया। कभी-कभी पति घर आ

**१६९७, जीवन संत कॉटेज, देवान मूल चंद स्ट्रीट, नजदीक आर्य समाज, पटियाला-१४७००१ (पंजाब)*

जाते थे और घर की ख़बर-सार ले जाते थे, किंतु रहे अधिकतर गुरु पातशाह (श्री गुरु नानक देव जी) की सेवा में ही।"[३]

श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी को खडूर साहिब में पधारने की विनती की, जिसे स्वीकार करके वे चार महीने बाद अपने शिष्य के घर पधारे। माता खीवी जी अपने पति के साथ गुरु जी के स्वागतार्थ कसबे के बाहर आ खड़े हुए। इस संबंध में श्री सरूप दास (भल्ला) का कथन है :

गुरू बाबा जी खडूर चले आए।
गुरू अंगद आगे लेने आए।
सुन माता खीवी दरशन आई।
परम पदारथ गुर दरशन पाई।

(महिमा प्रकाश)

माता खीवी जी की संतान : माता खीवी जी के घर दो सुपुत्रों-- श्री दासू जी एवं श्री दातू जी तथा दो सुपुत्रियों-- बीबी अमरो जी एवं बीबी अनोखी जी ने जन्म लिया।

लंगर-प्रथा की विकासकर्तरी : श्री गुरु अंगद देव जी को गुरगद्दी पर विराजमान कर श्री गुरु नानक देव जी ने उन्हें आदेश दिया कि वे खडूर साहिब को प्रचार का केंद्र बनाकर वहां पर ही निवास करें। खडूर साहिब में संगत जुड़ने लगी। श्री गुरु अंगद देव जी आई हुई संगत को गुरमति की शिक्षा देते। माता खीवी जी ने लंगर की सेवा का उत्तरदायित्व संभाल लिया। माता खीवी जी की सेवा के कारण लंगर की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई। इस संबंधी बाणी में भी ज़िक्र आता है :

बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥
लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली ॥

(पन्ना ९६७)

माता खीवी जी को श्री गुरु अंगद देव जी के बाद श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी एवं श्री गुरु अरजन देव जी के दर्शन करने एवं उनके समय में भी लंगर-सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। माता खीवी जी लंगर-सेवा की आदर्श मिसाल हैं तथा आज भी लंगर संस्था को सुयोग्य ढंग से चलाए रखने के लिए प्रेरणादायक हैं।

भाई केसर सिंघ (छिब्बर) ने उनके देहावसान का समय संवत् १६३९ बिक्रमी (सन् १५८२ ई) बताया है, यथा :

संमत् सोलां सै उनताली जब भए।
माता खीवी जी सुरपुर नूं गए।

(बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का)

संदर्भ-सूची :

१. प्रो. करतार सिंघ, सिक्ख इतिहास, पृष्ठ १४
२. डॉ. जसबीर सिंघ साबर : गुरु अंगद देव जी दे जीवन अते बाणी दा सामाजिक संदरभ, पृष्ठ ३ (८ जून, २००३ को खडूर साहिब की संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध-पत्र)
३. डॉ. महिंदर कौर (गिल्ल), माता खीवी जी दा लासानी जीवन ते घालणा, पृष्ठ १७६, श्री गुरु अंगद देव जी विशेषांक, पंजाबी दुनीआ, मार्च, अक्तूबर २००४; भाषा विभाग, पंजाब सरकार, पटियाला।



भक्त शेख़ फरीद जी : जीवन, बाणी और विचारधारा

-डॉ. जगजीत कौर*

मध्यकालीन भक्ति-धारा के अतीव चमकते हुए सितारे भक्त शेख़ फरीद जी हैं। ये ऐसे आध्यात्मिक भक्त, संत हैं जिन्होंने अपनी भक्ति-भाव-पूरित बाणी से कुल मानव समूह और विशेष रूप से पंजाब निवासियों को प्रभावित किया है। पंजाब के जन-जीवन का सामाजिक, आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक पक्ष भक्त शेख़ फरीद जी की बाणी से प्रेरित है। भक्त शेख़ फरीद जी इसलाम की सूफी परंपरा से प्रभावित थे तो दूसरी ओर सिक्ख गुरु साहिबान की विचार परंपरा से भी मेल खाते हैं। भाव-अभिव्यक्ति का माध्यम उनका ठेठ पंजाबी है। मुलतानी से मिलती-जुलती भाषा होने के कारण वे पंजाब के जन-जीवन के बहुत निकट हैं। भाषा की दृष्टि से तो वे पंजाबी के पहले कवि (बाणीकार) माने जाते हैं। वे पहले मुसलमान कवि हैं जिन्होंने पंजाब के परिवेश को अपनी बाणी की पृष्ठभूमि प्रदान की है। सामाजिक जीवन, पंजाब के स्थानीय, क्षेत्रीय रीति-रिवाज़, खाद्य पदार्थ, वाद्य-यंत्र, वस्त्र-भूषण आदि को ही उन्होंने बिंब विधान, प्रतीक विधान और उपमान आदि रूप में अपनी बाणी में रूपमान किया है, इसी लिए वे पंजाब के जन-जीवन में लोकप्रिय रहे हैं।

भक्त शेख़ फरीद जी का जन्म मुलतान ज़िले के खोतवाल (कोठीवाल) गांव में सन् ११७३ ई में हुआ। पिता शेख़ जमालुद्दीन सुलेमान और दादा शेख़ शैब (सुऐब) काबुल के रहने वाले थे। इनके पिता के काबुल के बादशाह फरुखशाह से अच्छे सम्बंध थे और भक्त शेख़ फरीद जी का विवाह भी दास वंश के किसी बादशाह संभवतः गियासुद्दीन बलबन की पुत्री से हुआ था। काबुल और गज़नी में आए दिन संघर्ष होते रहते थे और संघर्षों से तंग आकर इनके दादा और पिता ११२५ ई. में पंजाब आ बसे थे। यद्यपि भक्त शेख़ फरीद जी विवाहित थे परंतु ये दरवेशी जीवन व्यतीत करते थे और दरवेशी में ही इन्होंने कई नगरों-शहरों का भ्रमण किया। ये मुलतान, दिल्ली, हांसी, मध्य प्रदेश आदि कई स्थानों पर रहे। 'फरीदकोट' शहर का नाम भी संभवतः शेख़ फरीद जी के नाम पर ही चौधरी मोहकल देव ने श्रद्धावश रखा था। दिल्ली के प्रसिद्ध ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी इनके गुरु थे। ख्वाजा साहब की मृत्यु के उपरांत भक्त शेख़ फरीद जी पाकपटन आकर रहने लगे और वहीं १२६६ ई. में इनका ९३ वर्ष की आयु में देहांत हुआ। इनके सुयोग्य शिष्य निज़ामुद्दीन औलिया ने इनकी कब्र पर शानदार मकबरा बनवाया, जहां प्रत्येक वर्ष मुहर्रम पर अब भी मेला भरता है। (यह स्थान अब पाकिस्तान में है।)

भक्त शेख़ फरीद जी की माता काबुल के मौलवी वजीहुद्दीन की पालित पुत्री थी जो काबुल से मुलतान में आ बसे थे। मौलवी जी ने अपनी इस पालित पुत्री बीबी मरियम का विवाह गजनी के बादशाह के भाई शेख़ शैब के पुत्र

*१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (उ. प्र)-२४७००१, फोन : ९४१२४-८०२६६

जमालुद्दीन यानि कि भक्त शेख़ फरीद जी के पिता जी के साथ किया था। बीबी मरियम प्रारंभ से ही अत्यंत धार्मिक विचारों वाली, परहेज़गार एवं आस्थावान थीं। उनके तीन पुत्रों में से दूसरे पुत्र फरीदुद्दीन मसऊद पर उनकी धार्मिक वृत्ति का प्रभाव सर्वाधिक पड़ा। वे भक्त शेख़ फरीद जी को नियमित रूप से नमाज पढ़ने को कहती थीं। बाल्य-काल से ही भक्त शेख़ फरीद जी धर्म-ग्रंथों का अध्ययन करने लगे थे। १६ साल की उम्र में जब वे माता-पिता के साथ हज करने गए तब से ही इन्हें लोग हाफिज व हाजी कहने लगे थे। हज से वापिस लौटकर ये इस्लामी तालीम हासिल करने को काबुल भेज दिए गए, जहां इन्होंने कुरान हदीस इलम फिकां आदि का अध्ययन किया। वहीं काबुल में इनकी मुलाकात ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी से हुई और ये उनके मुरीद बन गए। ख्वाजा जी के साथ ये दिल्ली आए और हांसी, सिरसा आदि का भ्रमण करते हुए इस्लामी विद्या पढ़ते-पढ़ाते रहे। ख्वाजा जी के देहांत के पश्चात ये पाकपटन आ गए और अंतिम समय तक यहीं रहे।

भक्त शेख़ फरीद जी के जीवन सम्बंधी अनेक मनगढ़त कथाएं प्रचलित हैं कि ये शक्कर खाने के शौकीन थे तो 'शकरगंज' कहे गए; काठ की रोटी हमेशा अपने पास रखते थे, भूख लगने पर काट खाया करते थे; उलटा लटककर पेड़ के साथ पैर बांधकर तप किया करते थे आदि। ये सभी बातें निर्मूल हैं। प्रो. साहिब सिंघ ने 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब दरपण' में ऐसी अर्थहीन दंत-कथाओं को निरस्त करते हुए बताया है कि काठ की रोटी खाने योग्य नहीं होती। भक्त शेख़ फरीद जी अत्यंत सात्विक, संतोषी वृत्ति के थे। कई-कई दिन बिना खाए-पिए, संतुष्ट, प्रभु-भक्ति में लीन रहते थे। उल्टा लटककर तप करना शरीर को कष्ट देना होता है। कठिन तप-साधना के वे विरोधी थे। उनकी बाणी इसका साक्ष्य है। 'शकरगंज' वे इसलिए थे कि लोगों को उनके निकट बैठकर (चाहे वे हिंदू थे या मुसलमान) सुकून मिलता था। उनके मधुर, मीठे व्यवहार और मीठे वचन शक्कर जैसी मिठास लोगों के हृदय में घोल देते थे, इसी लिए वे उन्हें 'शकरगंज' (मिठास का समूह) कहते थे। उन्होंने स्वयं अपनी बाणी में कहा है :

इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥
सभना मन माणिक ठाहणु मूलि मचांगवा ॥
जे तउ पिरीआ दी सिक हिआउ न ठाहे कही दा ॥ (पन्ना १३८४)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब (पन्ना १३७७) में "सलोक शेख़ फरीद जी के" शीर्षक से १३० सलोक संकलित हैं। इनमें भक्त शेख़ फरीद जी के ११२ सलोक हैं। शेष सलोकों का विवरण प्रो. साहिब सिंघ ने इस प्रकार दिया है :

१. श्री गुरु नानक देव जी के सलोक = ४ (सलोक संख्या ३२, ११३, १२०, १२४)
२. श्री गुरु अमरदास जी के सलोक = ५ (सलोक संख्या १३, ५२, १०४, १२२, १३३)
३. श्री गुरु रामदास जी के सलोक = १ (सलोक संख्या १२१)
४. श्री गुरु अरजन देव जी के सलोक = ८ (सलोक संख्या ७५, ८२, ८३, १०५, १०७, १०९, ११०, १११)

कुल सलोक - १८

अब इन सलोकों के बीच में गुरु साहिबान के दिए सलोकों के बारे में भी ढेर मुगालता फैलाया गया है कि भक्त शेख़ फरीद जी के जो विचार गुरमति के अनुसार नहीं थे उनको सुधारने हेतु गुरु साहिबान द्वारा स्पष्टीकरण

दिया गया है। यह तथ्य भी सम्पूर्णतः निर्मूल है कि श्री गुरु नानक देव जी जब उदासियों (धर्म-प्रचार-यात्रा) के दौरान पाकपटन पहुंचे तो वहां भक्त शेख़ फरीद जी की गद्दी पर शेख़ ब्रहम (इब्राहीम) बैठे हुए थे। ये १५१० से १५५२ ई तक गद्दी पर ४२ वर्ष रहे। इनसे ही श्री गुरु नानक देव जी ने भक्त शेख़ फरीद जी की बाणी प्राप्त की, जो परंपरानुसार श्री गुरु अरजन देव जी को मिली तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित हुई। श्री गुरु नानक देव जी ने तभी से यह पवित्र बाणी सहेजकर रखी जब यह उन्हें अपने विचारानुकूल प्रतीत हुई। इसलिए यह कहना कि विचारों का मतभेद है, मूलतः उचित नहीं है। भक्त शेख़ फरीद जी के सलोकों को गुरु साहिबान ने अपने सलोकों द्वारा स्पष्ट इसलिए किया है कि जो विचार भक्त शेख़ फरीद जी ने संकेत-मात्र दिए हैं गुरु साहिबान ने उनकी स्पष्ट, विशद व्याख्या कर दी है। जनसाधारण की समझ में स्पष्ट तथ्य लाने के लिए उनकी व्याख्या की गई है अन्यथा कोई विरोध नहीं है। भक्त शेख़ फरीद जी की बाणी का विश्लेषण करने से यह तथ्य उजागर हो जाएगा। बाणी द्वारा प्रकट विचार इस प्रकार हैं :-

भक्त शेख़ फरीद जी के अनुसार परमात्मा एक है। वह सर्वव्यापक सभी जीवों में समाया हुआ है। वह अगम्य, अथाह, अनंत, सत्य स्वरूप, सर्वव्यापी है। उसे खोजने के लिए जंगलों-पहाड़ों की गुफाओं में जाने की आवश्यकता नहीं है। प्रेम-स्वरूप परमात्मा सभी जीवों की अंतरात्मा में विराजमान है। प्रभु का निवास हृदय में है :

-फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि ॥
वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि ॥
(पन्ना १३७८)

-कागा चूंडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि ॥
जितु पिंजरै मेरा सहु वसै मासु न तिदू खाहि ॥
(पन्ना १३८२)

प्रभु पावन, शुद्ध, निर्मल जल का सरोवर है। प्रभु का ही चिंतन करने की प्रेरणा शेख़ फरीद जी ने दी। प्रभु को छोड़ अन्य का सहारा ढूंढने से मनुष्य के हाथ कुछ नहीं लगता :

फरीदा सोई सरवरु ढूढि लहु जिथहु लभी वथु ॥
छपड़ि ढूढै किआ होवै चिकड़ि डुबै हथु ॥
(पन्ना १३८०)

यह सृष्टि, जगत एकमात्र परमात्मा की रचना है और यह सुंदर, आकर्षक दिखने वाला जगत परिवर्तनशील है, नाशमान है। यहां जीव का निवास स्थापी रूप से नहीं है। यह संसार सुंदर उपवन अथवा सराय की तरह है जहां भांति-भांति के जीव रूपी पक्षी इसके तट की शोभा को बढ़ाए रखते हैं। एक दिन आता है जब जीव रूपी पक्षी बारी-बारी से इसे छोड़ जाते हैं। दो-चार जीव रूपी कमल पुष्प खिलते हैं, पुनः सूख जाते हैं। सराय में भी अतिथि-जीव एक-एक करके चले आते हैं। समय होते ही मृत्यु का नगाड़ा बजता है, अतिथि-जीव चलने की तैयारी करते हैं :

-चलि चलि गईआं पंखीआं जिन्ही वसाए तल ॥
फरीदा सरु भरिआ भी चलसी थके कवल इकल ॥
(पन्ना १३८१)

-फरीदा पंख पराहुणी दुनी सुहावा बागु ॥
नउबति वजी सुबह सिउ चलण का करि साजु ॥
(पन्ना १३८२)

सभी सांसारिक सम्बंध नश्वर हैं :

फरीदा किथै तैडे मापिआ जिन्ही तू जणिओहि ॥
तै पासहु ओइ लदि गए तूं अजै न पतीणोहि ॥
(पन्ना १३८१)

सारा संसार नश्वर है। जगत में सुंदर

महल, चौबारे, अहालिकाएं निर्मित करने वाले भी स्थिर नहीं रहते, सभी काल कवलित हो जाते हैं :

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ उसारेदे भी गए ॥
कूड़ा सउदा करि गए गोरी आइ पए ॥
(पन्ना १३८०)

सांसारिक पदार्थों का मोह त्यागकर एकमात्र सत्य स्वरूप चिरंतन परमात्मा से प्रेम करो :

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ एतु न लाए चितु ॥
मिटी पई अतोलवी कोइ न होसी मितु ॥
(पन्ना १३८०)

मौत को हमेशा याद रखो। उस असली ठिकाने का ध्यान रखो जहां अंत में जाकर रहना है :

फरीदा मंडप मालु न लाइ मरग सताणी चिति धरि ॥
साई जाइ सम्हालि जिथै ही तउ वंञणा ॥
(पन्ना १३८१)

अंत में इस जीव को साईं की दरगाह में जाना है। भले ही कितने पर्दों, दरवाज़ों में स्वयं को छुपाकर रखो, मौत सभी दरवाज़े तोड़कर जीव तक पहुंच जाएगी। बड़े-बड़े शक्तिमान, शौर्यवान, मलक, मशाइक, शेख़ कोई इससे नहीं बच पाया है। प्रभु-नाम का सिमरन करो, शुभ कर्मों में जीवन को लगाओ। प्रभु-दरगाह में शुभ कर्मों पर ही जीव का निपटारा होना है :

साढे त्रै मण देहुरी चलै पाणी अंनि ॥
आइओ बंदा दुनी विचि वति आसूणी बंन्हि ॥
मलकल मउत जां आवसी सभ दरवाजे भंनि ॥
तिन्हा पिआरिआ भाईआं अगै दिता बंन्हि ॥
वेखहु बंदा चलिआ चहु जणिआ दै कंन्हि ॥
फरीदा अमल जि कीते दुनी विचि दरगह आए कंमि ॥ *(पन्ना १३८३)*

भक्त शेख़ फरीद जी मनुष्य को सदाचारपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। मनुष्य द्वारा किए गए शुभ कर्म ही प्रभु-दरगाह में उसकी प्रतिष्ठा का मूल कारण बनेंगे। उसे ऐसे कर्म नहीं करने चाहिए जिसके कारण उसे शर्मिंदा होना पड़े। अपने मन को समतल करो, विकारों की ऊबड़-खाबड़ दूर करो :

-फरीदा जिन्ही कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि ॥
मतु सरमिंदा थीवही सांई दै दरबारि ॥
(पन्ना १३८१)

-फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि ॥
अगै मूलि न आवसी दोजक संदी भाहि ॥
(पन्ना १३८१)

शरीर नाशवान है। मृत्यु जीवन का अंतिम सत्य है :

बुढा होआ सेख फरीदु कंबणि लगी देह ॥
जे सउ वर्हिआ जीवणा भी तनु होसी खेह ॥
(पन्ना १३८०)

भक्त शेख़ फरीद जी मानव-जीवन, मानव-शरीर को सार्थक करने का एकमात्र साधन एकमात्र सत्य-ज्ञान-स्वरूप परमात्मा के साथ प्रेमपूर्ण भक्ति-साधना, नाम-सिमरन द्वारा एकात्म-भाव से लीन हो जाना बताते हैं। परमात्मा के प्रति आस्था, विश्वास, आत्म-समर्पण, सेवा, चाकरी में जीवन की सफलता है :

फरीदा साहिब दी करि चाकरी दिल दी लाहि भरांदि ॥ *(पन्ना १३८१)*

सात्विक, संतोषी जीवन-यापन करो :

रुखी सुखी खाइ कै ठंढा पाणी पीउ ॥

अपने अंदर के दोष दूर करो :

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवां करि देखु ॥
(पन्ना १३७८)

परमात्मा के प्रति निष्ठावान होना, प्रेमपूर्ण

जीवन जीना ही मानव-ध्येय है। जिसके हृदय में प्रभु-प्रेम नहीं, वह प्राणी मृतक तुल्य है :

बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु ॥
फरीदा जितु तनि बिरहु न ऊपजै सो तनु जाणु मसानु ॥ (पन्ना १३७९)

भक्त शेख़ फरीद जी एक आदर्श नागरिक का चित्र पेश करते हैं जो गृहस्थ में रहते हुए शरीर को बिना कष्ट दिए प्रभु-भक्ति में जीवन-यापन करता है, क्रोध आदि विकारों को वश में रख प्रेम-भाव से सबके साथ जीवन व्यतीत करता हुआ प्रतिपल प्रभु-भक्ति में लीन रहता है। वही जीवन सार्थक है जो समाज में रहकर प्रभु के प्रति समर्पित है, अन्यथा *"जो सिरु साई ना निवै सो सिरु कीजै कांइ ॥"* ऐसे सिर का क्या करना है जो प्रभु की याद में झुके न :

जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु कपि उतारि ॥
(पन्ना १३८१)

एक-वर्षीय सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स

दाख़िला सूचना सत्र-2015

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा सिक्ख इतिहास, गुरमति विचारधारा, सिक्खी सिद्धांत तथा सिक्ख रहित मर्यादा की पंजाबी/हिंदी/अंग्रेजी माध्यम द्वारा घर बैठे जानकारी मुहैया करवाने वाले एक-वर्षीय सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स के सत्र-2015 में दाख़िला लेने हेतु हर धर्म का व्यक्ति चाहे वो किसी भी क्षेत्र में कार्यरत हो, आवेदन कर सकता है। भारत के नागरिकों के लिए दाख़िला फीस 100 रुपए प्रति व्यक्ति है तथा विदेशी नागरिकों के लिए प्रति व्यक्ति 30 अमेरिकी डालर या 20 पौंड (यू. के.) (भारतीय मुद्रा में 1500 रुपए) है। आवेदन फार्म तथा दाख़िला फीस (बैंक ड्राफ्ट/मनी आर्डर/ नकद रूप में) सचिव, धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गु. प्र. कमेटी), श्री अमृतसर के नाम भेजी जा सकती है। दाख़िला फार्म या अन्य जानकारी प्राप्त करने हेतु निम्नलिखित पते पर या प्रचारकों के साथ संपर्क स्थापित किया जा सकता है या वेबसाईट www.sgpc.net देखी जा सकती है। कोर्स में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर आने वाले विद्यार्थियों को क्रमश: 5100, 4100 तथा 3100 रुपए की राशि देकर सम्मानित किया जाता है और 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों को 1100 रुपए प्रति विद्यार्थी देकर पुरस्कृत किया जाता है।

अधिक जानकरी हेतु संपर्क करें,
प्रभारी,
सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स
धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गु. प्र. कमेटी)
श्री अमृतसर-143006
फोन : 0183-2553962, 88722-20870

आदर्श मानव-जीवन के प्रणेता : भक्त शेख़ फरीद जी

-डॉ. परमजीत कौर*

सरल, पवित्र व्यक्तित्व के स्वामी, सदैव परमात्मा की बंदगी में लीन रहने वाले, विरह को सुलतान तथा मुहब्बत को ज़िंदगी का सार-तत्व समझने वाले, *"इकु फिका ना गालाइ सभना मै सचा धणी"* का उपदेश देने वाले भक्त शेख़ फरीद जी के बुजुर्ग काबुल के रहने वाले थे। भक्त शेख़ फरीद जी के दादा काज़ी शैब (सुऐब) लगभग बारहवीं सदी के मध्य में भारत में आकर बस गये। फरीदुद्दीन मसऊद, जिनको शेख़ फरीद जी के नाम से जाना जाता है, का जन्म सन् ११७३ में शेख जमालुद्दीन सुलेमान के घर हुआ जो काजी शैब के तीन पुत्रों में से दूसरे स्थान पर थे। भक्त शेख़ फरीद जी की मां माता मरियम प्रभु के रंग में रंगी धार्मिक विचारों वाली स्त्री थी। उन्होंने भक्त शेख़ फरीद जी के हृदय में प्रभु के प्रति भक्ति-भावना तथा दृढ़ विश्वास पैदा किया। अल्लाह की बंदगी में लीन रहने के कारण भक्त शेख़ फरीद जी को 'कादी बच्चा दिवाना' कहकर पुकारा जाता था। भक्त शेख़ फरीद जी की इस्लाम सम्बंधी तालीम काबुल में हुयी तथा मुलतान में बहाऊद्दीन ज़करिया से आपने व्यवहारिक तथा धार्मिक विद्या प्राप्त की। मुलतान में ही शेख़ फरीद जी को ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार ऊसी के दर्शन हुए। उनके आध्यात्मिक ज्ञान तथा तेज से प्रभावित होकर भक्त शेख़ फरीद जी उनके मुरीद बन गए। अपने मुरशिद की आज्ञा के अनुसार भक्त शेख़ फरीद जी कुछ समय हांसी तथा सिरसा में भी रहे, परंतु ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार के देहांत के बाद भक्त शेख़ फरीद जी ने 'अजोधन' में पक्का ठिकाना बना लिया, जिसे 'पाकपटन' भी कहा जाता है।

भक्त शेख़ फरीद जी अरबी-फारसी के उच्च कोटि के विद्वान थे। पंजाब में जन्म तथा पालन-पोषण होने के कारण पंजाबी आपकी अपनी भाषा थी। भक्त शेख़ फरीद जी ने समाज-सुधार हेतु पंजाबी भाषा का ही प्रयोग किया। मधुर भाषा तथा मधुर स्वभाव के कारण आप जी के नाम के साथ 'गंजशकर' जुड़ गया। भक्त शेख़ फरीद जी का जीवन आम लोगों के लिए पथ-प्रदर्शक बन गया। शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया भक्त शेख़ फरीद जी के प्रिय मुरीद तथा आध्यात्मिक उत्तराधिकारी कहे जाते हैं। भक्त शेख़ फरीद जी ने अपने अंतिम समय अपना जामा, मुसल्ला तथा डंडा इनको सौंप दिया था।

शाह हुसैन तथा पीर बुल्ले शाह की रचना पर भक्त शेख़ फरीद जी की बाणी का प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आप जी द्वारा उच्चरित दो शबद आसा राग में तथा दो शबद सूही राग में हैं। इनके अलावा ११२ सलोक हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने भक्त शेख़ फरीद जी की बाणी स्वयं एकत्रित की थी। जब श्री गुरु नानक देव जी पाकपटन गए तो भक्त शेख़ फरीद जी की गद्दी पर (ग्यारहवें स्थान पर) बैठे बिहराम (इब्राहीम) से गुरु जी ने भक्त शेख़ फरीद जी की बाणी सुनी और उस पर विचार किया। पाकपटन में

*६२०, गली नं. १, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर-१३५००१ (हरियाणा); फोन : ९८१२३-५८१८६

उच्चारण की गयी श्री गुरु नानक जी की बाणी तथा शेख़ फरीद जी की बाणी में गहरी सांझ देखी जा सकती है। भक्त शेख़ फरीद जी अपने एक सलोक में बताते हैं कि यदि स्वामी कभी याद ही न आए तो केवल सुहागिन नाम रख लेने से कोई लाभ नहीं होता :

साहुरै ढोई ना लहै पेईऐ नाही थाउ ॥
पिरु वातड़ी न पुछई धन सोहागणि नाउ ॥
(पन्ना १३७९)

श्री गुरु नानक देव जी ने भक्त शेख़ फरीद जी के सलोक की व्याख्या करते हुए सुहागिन के वास्तविक लक्षण बताते हुए फरमान किया है :

साहुरै पेईऐ कंत की कंतु अगंमु अथाहु ॥
नानक सो सोहागणी जु भावै बेपरवाह ॥
(पन्ना १३७९)

भक्त शेख़ फरीद जी की बाणी में सर्वव्यापी आत्मिक सच्चाई की झलक है तथा परमात्मा की बंदगी पर बल दिया गया है, जो दिल से की गयी मुहब्बत तथा प्रभु की कृपा से प्राप्त होती है :

तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी ॥
सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी ॥ (पन्ना ४८८)

भक्त शेख़ फरीद जी खुदा की बंदगी को मनुष्य के जीवन का उद्देश्य मानते हैं। जो परमात्मा के प्रेम-रंग में रंगे हुए हैं वही असल मनुष्य हैं। जिन्होंने परमात्मा के नाम को भुला दिया है वे धरती पर सिर्फ भार तुल्य हैं :

रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के ॥
विसरिआ जिन्ह नामु ते भुइ भारु थीए ॥
(पन्ना ४८८)

भक्त शेख़ फरीद जी के अनुसार प्रभु-भक्ति से हीन मनुष्य का सिर सूखी लकड़ी के समान है। उस सिर को हांडी के नीचे ईंधन के रूप में जला देना चाहिए :

जो सिरु साई ना निवै सो सिरु कीजै कांइ ॥
कुंने हेठि जलाईऐ बालण संदै थाइ ॥
(पन्ना १३८१)

ऐसे मनुष्य मान-सम्मान आदि प्राप्त करने के बावजूद भी मानसिक शांति के अभाव में तनावपूर्ण ज़िंदगी व्यतीत करते हैं तथा भयानक मुख वाले प्रतीत होते हैं :

फरीदा तिना मुख डरावणे जिना विसारिओनु नाउ ॥
ऐथै दुख घणेरिआ अगै ठउर न ठाउ ॥
(पन्ना १३८३)

परमात्मा के बिना अन्य आश्रय की झांक रखने वाले का जीवन धिक्कारयोग्य है :

धिगु तिन्हा दा जीविआ जिना विडाणी आस ॥
(पन्ना १३७९)

मनुष्य इस संसार में ज़िंदगी के गिने-चुने दिन लेकर प्रभु-बंदगी करने हेतु आया है। इस बात को भुलाकर प्रत्येक जीव अपने सिर पर मोह की पोटली उठाये फिरता है। निर्धन हो या अमीर, साधु हो या गृहस्थी माया के मोह के कारण सारे दुखी हैं। दुनिया गुलज़ार दिखायी देती है परंतु इसका मोह खतरनाक एवं छिपी हुयी आग है जो अंदर ही अंदर मन में जलती रहती है। इसमें पड़े हुए लोगों को ज़िंदगी के सही रास्ते की सूझ नहीं होती :

किझु न बुझै किझु न सुझै दुनीआ गुझी भाहि ॥
(पन्ना १३७८)

कसुंभे के फूल के समान माया के साथ मनुष्य का मोह जैसे-जैसे बढ़ता है वैसे-वैसे उसके दुख-क्लेश बढ़ते जाते हैं। भक्त शेख़ फरीद जी ने इसको चाशनी में लिपटी हुयी विष-गंदलें कहा है :

फरीदा ए विसु गंदला धरीआं खंडु लिवाड़ि ॥
इकि राहेदे रहि गए इकि राधी गए उजाड़ि ॥
(पन्ना १३७९)

सांसारिक पदार्थों के लिए दूसरे के अधीन रहना बहुत बुरी बात है। भक्त शेख़ फरीद जी कह रहे हैं कि यदि मुझे पराधीन बनाना है तो मेरे शरीर में से प्राण निकाल लो :

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझै न देहि ॥
जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ॥
(पन्ना १३८०)

भक्त शेख़ फरीद जी के मत में जीवन की सफलता का मापदंड धन-पदार्थ नहीं है। शरीर की सफलता गुणों तथा सदाचार से आंकी जाती है। माया से मोह रखने वाले झूठ के व्यापारी हैं। जो मनुष्य धन-पदार्थों के कारण गलत मार्ग पर चलते हैं उनकी गति कपास, तिल, कागज़ तथा मिट्टी की हांडी के समान होती है। कपास बेलन में बेली जाती है, तिल कोल्हू में पीड़े जाते हैं, हांडी के नीचे आग जलायी जाती है :

फरीदा वेखु कपाहै जि थीआ जि सिरि थीआ तिलाह ॥
कमादै अरु कागदै कुंने कोइलिआह ॥
मंदे अमल करेदिआ एह सजाइ तिनाह ॥
(पन्ना १३८०)

भक्त शेख़ फरीद जी ने आडंबर रहित जीवन जीने पर बल दिया है। वाह्य वेश फकीरी वाला है परंतु मन विष-गंदलों के कारण भटकता रहता है। सतसंग में जाकर भी मन स्थिर नहीं रहता है। लोगों को दिखाने के लिए मधुर बाणी बोली जाती है। अंदर छल-कपट है, झूठ है। कर्मकांडों के चक्कर में पड़कर सिमरन से रहित जीवन है तो सारे उद्यम पाखंड बन जाते हैं, मानसिक शांति का अभाव बना रहता है :

फरीदा कंनि मुसला सूफु गलि दिलि काती गुड़ु वाति ॥
बाहरि दिसै चानणा दिलि अंधिआरी राति ॥
(पन्ना १३८०)

मन को विषयों के आकर्षण से बचाने के लिए, दसों दिशाओं में भटकते मन को स्थिर करने के लिए इंद्रियों को वश में करना ज़रूरी है, नहीं तो असीम कामनायें आध्यात्मिक जीवन के रास्ते में रुकावट बन जाती हैं :

-आजु मिलावा सेख फरीद टाकिम कूंजड़ीआ मनहु मचिंदड़ीआ ॥ *(पन्ना ४८८)*
-फरीदा इहु तनु भउकणा नित नित दुखीऐ कउणु ॥
कंनी बुजे दे रहां किती वगै पउणु ॥
(पन्ना १३८२)

भक्त शेख़ फरीद जी समझा रहे हैं कि सुख-प्राप्ति का एक ही रास्ता है कि मनुष्य सांसारिक पदार्थों का मोह त्यागकर अपने आपको संवारे तथा प्रभु के साथ जुड़े। केवल परमात्मा का ही होकर रहे। जो जीव परमात्मा का होकर रहता है, सारा संसार उसका हो जाता है। उसको कोई अभाव, कोई दुख नहीं सताता :

आपु सवारहि मै मिलहि मै मिलिआ सुखु होइ ॥
फरीदा जे तू मेरा होइ रहहि सभु जगु तेरा होइ ॥ *(पन्ना १३८२)*

हृदय में प्रभु के लिए सच्चा प्रेम हो तो ही की गयी बंदगी स्वीकार होती है। शेख़ फरीद जी के अनुसार यदि परमात्मा की भक्ति करते हुए मन में कोई अपेक्षा है, सांसारिक लालच है तो समझो प्रभु-प्रेम सच्चा नहीं है। ऐसे में यदि इच्छा पूरी न हुयी तो प्रेम टूट जायेगा। यदि टूटे हुए छप्पर पर बारिश पड़ती रहे तो कितना समय निकल सकता है ?

फरीदा जा लबु ता नेहु किआ लबु त कूड़ा नेहु ॥
किचरु झति लघाईऐ छपरि तुटै मेहु ॥
(पन्ना १३७८)

प्रभु-प्रेम को प्राप्त करने के लिए सांसारिक मोह तथा लोकाचार को छोड़ना पड़ता है। जब

तक लोकाचार निभाने के चक्कर में झूठी मान-प्रतिष्ठा के मोह में पड़े रहेंगे, 'दुनिया क्या कहेगी' की चिंता में पड़े रहेंगे, परमात्मा के साथ सच्चा प्रेम नहीं हो सकता। परमात्मा के साथ मन को जोड़ने के लिए झूठी दिखावे वाली रस्मों के मोह से मन को हटाना ज़रूरी है, क्योंकि एक कदम आगे रखने के लिए पिछला कदम उठाना ज़रूरी होता है। भक्त शेख़ फरीद जी फरमान करते हैं :

फरीदा दरवेसी गाखड़ी चलां दुनीआं भति ॥
बंन्हि उठाई पोटली किथै वंञा घति ॥
(पन्ना १३७७)

यही नहीं, हृदय में प्रभु-प्रेम बनाए रखने के लिए अपने आपको संवारना बहुत ज़रूरी है। अपने अंदर से अवगुणों को निकालकर गुणों को धारण करने से ही परमात्मा का सामीप्य प्राप्त किया जा सकता है। मन के भ्रम तथा भ्रांतियों को दूर करके, संतोष धारण करके की गयी बंदगी फलीभूत होती है। भक्त शेख़ फरीद जी ने नैतिक गुणों को बहुत महत्त्व दिया है। नैतिक गुण ही परमात्मा के प्रेम का आधार हैं। भक्त शेख़ फरीद जी समझा रहे हैं कि अन्य लोगों के मंद-कर्मों को देखने तथा आलोचना करने के स्थान पर अपने कर्मों का लेखा-जोखा करना चाहिए। किसी का बुरा करने के बारे में न सोचना, गुस्से को मन में न रखना, मधुर बोलना, सत्य बोलना, किसी का दिल न दुखाना, विनम्रता, सहनशीलता आदि गुणों को धारण करने से माया की जंज़ीरों से निकलने का रास्ता आसान हो जाता है :

-फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥
(पन्ना १३८१)
-फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवां करि देखु ॥
(पन्ना १३७८)

इन गुणों को अपनाने से ही परमात्मा का प्रेम प्राप्त किया जा सकता है :

-निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ॥
ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु ॥
-इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥
(पन्ना १३८४)

भक्त शेख़ फरीद जी असली जीवन-ढंग के बारे में बताते हैं कि वे काम छोड़ दो जिनको करने से कोई सामाजिक लाभ नहीं होता, आत्मिक उन्नति में बाधा पड़ती है :

फरीदा जिन्ही कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि ॥
मतु सरमिंदा थीवही सांई दै दरबारि ॥
(पन्ना १३८१)

जो शुभ कर्म किये जाते हैं वे ही परमात्मा की दरगाह में सहायक होते हैं :

फरीदा अमल जि कीते दुनी विचि दरगह आए कंमि ॥ *(पन्ना १३८३)*

आत्मिक जीवन के मार्ग पर सुचारू रूप से चलने के लिए गुरु की शरण ज़रूरी है। गुरु के शबद को अंदर बसा लेने से अपने अवगुणों का एहसास होता है। यह समझ आ जाती है कि हम अपने मूल प्रभु से टूटे हुए हैं, इसी लिए दुखी हैं। इस अवस्था में मनुष्य गुरमति-मार्ग पर चलने का संकल्प करता है। उसका मन नाम-सिमरन में लगना शुरू हो जाता है तथा धीरे-धीरे हृदय में प्रभु-प्रेम पैदा हो जाता है। भक्त शेख़ फरीद जी समझाते हैं कि जो रास्ता गुरु बताये उस पर मुरीदों की तरह चलना चाहिए। जो जीव अपनी ज़िंदगी रूपी किश्ती का मल्लाह गुरु को बना लेते हैं वे दुखों के समुद्र में डूबने से बच जाते हैं :

-बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ ॥
जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऐ ॥ (पन्ना ४८८)
-लंमी लंमी नदी वहै कंधी केरै हेति ॥
बेड़े नो कपरु किआ करे जे पातण रहै सुचेति ॥
(पन्ना १३८२)

प्रभु से प्रेम हो जाये तो प्रभु-मिलन के मार्ग में कोई दुख, कोई तकलीफ़ रुकावट नहीं बनती :

फरीदा गलीए चिकड़ु दूरि घरु नालि पिआरे नेहु ॥
चला त भिजै कंबली रहां त तुटै नेहु ॥
भिजउ सिजउ कंबली अलह वरसउ मेहु ॥
जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ॥
(पन्ना १३७९)

नाम-सिमरन करने वाले, बंदगी के मार्ग पर चलने वाले मनुष्य के जीवन में विकार भी बाधक नहीं बनते :

बेड़ा बंधि न सकिओ बंधन की वेला ॥
भरि सरवरु जब ऊछलै तब तरणु दुहेला ॥
हथु न लाइ कसुंभड़ै जलि जासी ढोला ॥
(पन्ना ७९४)

बंदगी करने के लिए जंगलों में जाने या कोई विशेष वेशभूषा धारण करने की आवश्यकता नहीं है। परमात्मा तो हृदय में बसता है :

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि ॥
वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि ॥
(पन्ना १३७८)

संतोष वाला जीवन ही वास्तविक फकीरी है। जब तक अंदर तृष्णा है, मन स्थिर नहीं रह सकता। सब्र वाले जीवों का मन उदार हो जाता है, सबके लिए प्रेम का जज़्बा पैदा हो जाता है, संकीर्णता समाप्त हो जाती है तथा परमात्मा का सामीप्य प्राप्त हो जाता है :

सबर अंदरि साबरी तनु एवै जालेन्हि ॥
होनि नजीकि खुदाइ दै भेतु न किसै देनि ॥
(पन्ना १३८४)

बंदगी के लिए अमृत वेला उत्तम माना गया है। भक्त शेख़ फरीद जी के मत में जो अमृत वेला में नहीं जागता वह मानो जीवित ही मरा हुआ है :

फरीदा पिछल राति न जागिओहि जीवदड़ो मुइओहि ॥
जे तै रबु विसारिआ त रबि न विसरिओहि ॥
(पन्ना १३८३)

जो अमृत वेला में जागकर नाम जपते हैं वे परमात्मा की कृपा के पात्र होते हैं :

पहिलै पहरै फुलड़ा फलु भी पछा राति ॥
जो जागंन्हि लहंनि से साई कंनो दाति ॥
(पन्ना १३८४)

भक्त शेख़ फरीद जी सचेत कर रहे हैं कि यह नहीं सोचना चाहिए कि यदि युवा अवस्था में भक्ति नहीं की तो कोई बात नहीं, बुढ़ापे में कर लेंगे। जिन्होंने युवा अवस्था में प्रभु को याद नहीं किया, उनमें से कोई विरला ही बुढ़ापे में परमात्मा को याद करता है, क्योंकि युवा अवस्था में आदतें पक्की हो जाती हैं, माया के पीछे भागते हुए तृष्णा का शिखर छुआ जाता है, ऐसे में बुढ़ापे में मन को एकदम इन सबसे हटाकर बंदगी की तरफ मोड़ना कठिन हो जाता है :

फरीदा काली जिनी न राविआ धउली रावै कोइ ॥
करि सांई सिउ पिरहड़ी रंगु नवेला होइ ॥
(पन्ना १३७८)

बंदगी का अहंकार नहीं करना चाहिए। रसना से प्रभु का नाम तो प्रत्येक जीव ले लेता है परंतु भक्ति का फल वही प्राप्त करता है जो अपनी बुद्धि का अभिमान न करे, सदा विनम्र बना रहे, बल होते हुए भी किसी के साथ जबरदस्ती न करे, किसी को दबाये न, जब कुछ भी देने योग्य न हो तो अपना हिस्सा ही बांट

दे, सदा दूसरों की भावनाओं का ध्यान रखे :
मति होदी होइ इआणा ॥ ताण होदे होइ निताणा ॥
अणहोदे आपु वंडाए ॥ को ऐसा भगतु सदाए ॥
(पन्ना १३८४)

भक्त शेख़ फरीद जी ने शरीर की नश्वरता को दृढ़ कराने के लिए तथा मन में वैराग्य पैदा करने के लिए अपनी बाणी में मौत का उल्लेख बार-बार किया है, ताकि माया का मोह मनुष्य को गलत रास्ते पर न ले जा सके। शेख़ फरीद जी ने यत्न किया है कि मनुष्य हमेशा यह याद रखे कि जिसने जन्म लिया है उसकी मौत अवश्यंभावी है। आप दृष्टांत द्वारा समझाते हैं कि यदि कोई छत पर जाकर दौड़ लगाये तो वह दौड़ कितनी लंबी हो सकती है? अंत में तो दौड़ समाप्त हो ही जायेगी। ठीक इसी तरह एक दिन आयु भी समाप्त हो जायेगी :
फरीदा कोठे धुकणु केतड़ा पिर नीदड़ी निवारि ॥
जो दिह लधे गाणवे गए विलाड़ि विलाड़ि ॥
(पन्ना १३८०)

एक अन्य दृष्टांत द्वारा भक्त शेख़ फरीद जी समझा रहे हैं कि दरिया के किनारे खड़ा वृक्ष कितना समय धैर्य रखेगा? कच्चे बर्तन में पानी कितनी देर तक रखा जा सकता है? इसी तरह मनुष्य मौत रूपी नदी के किनारे पर खड़ा है। शरीर में से श्वास समाप्त होते जा रहे हैं :
-कंधी उतै रुखड़ा किचरकु बंनै धीरु ॥
फरीदा कचै भांडै रखीऐ किचरु ताई नीरु ॥ . .
जे सउ वरिआ जीवणा भी तनु होसी खेह ॥
(पन्ना १३८२)

महल, कोठियां, धन-पदार्थ, यौवन, संगी-साथी कुछ भी साथ नहीं जाता, सब कुछ यहीं छोड़ना पड़ता है :
फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ एतु न लाए चितु ॥
मिटी पई अतोलवी कोइ न होसी मितु ॥
(पन्ना १३८०)

परमात्मा की बंदगी न करने वाले जीवों का जीवन चिंता, फिक्र, दुख, तनाव से भरा रहता है। भक्त शेख़ फरीद जी के अनुसार परमात्मा से बिछुड़कर हमारे जीवन का यह हाल है कि चिंता हमारी खाट बनी हुयी है, दुख उस खाट का बाण हैं तथा वियोग बिछौना है :
फरीदा चिंत खटोला वाणु दुखु बिरहि विछावण लेफु ॥
एहु हमारा जीवणा तू साहिब सचे वेखु ॥
(पन्ना १३७९)

संक्षेप में कह सकते हैं कि भक्त शेख़ फरीद जी के अनुसार संतोष, विनम्रता, सहनशीलता, मधुर वाणी, किसी का दिल न दुखाना, सांसारिक पदार्थों का लालच न करना, परमात्मा का ही आश्रय लेना, खलकत की सेवा, परिश्रम की कमाई तथा श्वास-श्वास प्रभु का सिमरन करना आदि गुण बंदगी करने वाले के जीवन को सफल बना देते हैं। परमात्मा के नाम-रस के आनंद से मन तृप्त हो जाता है, किसी अन्य पदार्थ की तृष्णा नहीं रह जाती। भक्त शेख़ फरीद जी के मत में शक्कर, चीनी, मिश्री, गुड़, शहद तथा भैंस का दूध ये सारी वस्तुएं मीठी हैं, परंतु इनकी मधुरता हरि-नाम-रस का मुकाबला नहीं कर सकती। हरि-नाम-रस तो बहुत ही मीठा है :
फरीदा सकर खंडु निवात गुड़ु माखियो मांझा दुधु ॥
सभे वसतू मिठीआं रब न पुजनि तुधु ॥
(पन्ना १३७९)

बंदगी की दात परमात्मा की कृपा से प्राप्त होती है, इसलिए सदैव परमात्मा की कृपा-प्राप्ति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। यदि हृदय में प्रभु के लिए प्रेम, प्रभु से जुड़ने की चाह पैदा नहीं हुयी तो जीवन व्यर्थ है :
फरीदा जितु तनि बिरहु न ऊपजै सो तनु जाणु मसानु ॥ *(पन्ना १३७९)*

वैसाखी

-*सिमरजीत सिंघ**

वैसाखी भारत के प्राचीन त्योहारों में से एक है। यह मौसमी त्योहार है जो वैसाख के महीने की पहली तारीख को मनाया जाता है। पंजाब कृषि प्रधान प्रांत है, इसलिए यहां के वसनीकों की आर्थिकता कृषि पर निर्भर करती है। पक्की फसल हर घर के लिए आर्थिक रूप से खुशहाली लाने की प्रतीक है जिस कारण इस दिन पंजाब का हर बाशिंदा खुशी में झूम उठता है। किसान वर्ग में इस दिन विशेष खुशी देखने को मिलती है। इस दिन किसानों द्वारा गेहूं की फसल को दातरी लगाने की रस्म अदा की जाती है। भारतीयों का यह सर्वसांझा त्योहार है। हिंदू मत में यह रिवायत है कि इस दिन ऋषि व्यास ने ब्रह्मा द्वारा रखे चार वेदों का पहली बार पाठ करके भोग डाला था। हिंदू मत में यह भी मान्यता है कि इस दिन राजा जनक ने महान यज्ञ किया था, जिसमें अवधूत अष्टावक्र ने राजा जनक को ज्ञान प्रदान किया था। बुद्ध मत में मान्यता है कि इस दिन महात्मा बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। बुद्ध मत के प्रचारक इस दिन विशेष समागम करते हैं।

सिक्ख मत में वैसाखी का विशेष महत्त्व है। पंजाब के जलंधर ज़िले में इस दिन "वसोआ" नामक त्योहार मनाया जाता है। "वसोआ" वैसाखी शब्द का ही परिवर्तित रूप प्रतीत होता है। भाई गुरदास जी अपनी प्रथम वार की २७वीं पउड़ी में ज़िक्र करते हैं कि :
घरि घरि अंदरि धरमसाल होवै कीरतनु सदा विसोआ।

**संपादक, गुरमति ज्ञान एवं गुरमति प्रकाश*

सिक्ख मत में सबसे पहले श्री गुरु अमरदास जी के समय गोइंदवाल साहिब में वैसाखी वाले दिन गुरमति समागम करके वैसाखी मनाई गई। पंजाब के ज़िला कपूरथला में डल्ला नामक गांव है। इस गांव में भाई पारो जुल्का नाम का सिक्ख रहता था। इसने श्री गुरु अंगद देव जी से सिक्खी की दात प्राप्त की थी। गुरु जी इसकी सिक्खी से प्रभावित होकर इसको 'परमहंस' कहकर बुलाया करते थे। भाई गुरदास जी ने इनके बारे में अपनी ११वीं वार में लिखा है :
पारो जुलका परमहंसु पूरै सतिगुर किरपा धारी।

"आदि सिक्ख ते आदि साखीआं" कर्त्ता स. सतिबीर सिंघ के अनुसार भाई पारो जी ने श्री गुरु अंगद देव जी से पूछा था कि परमहंस कौन होता है? गुरु जी ने फरमाया था- "हंस की चोंच खट्टी होती है। हंस चोंच दूध में डालता है तो दूध फट जाता है और फुट्टियां अलग हो जाती हैं। दूध की फुट्टियां वो खा जाता है और पानी छोड़ देता है। इसी तरह जो जीव परमहंस हो जाता है, बाणी पढ़ने-विचारने के कारण उनकी बुद्धि बीच बीचार आकर प्राप्त हो जाती है। वही उनकी चोंच है।" श्री गुरु अंगद देव जी के बाद ये श्री गुरु अमरदास जी की सेवा में रहने लग गए। भाई पारो जुल्का घोड़े पर सवार होकर प्रतिदिन गुरु जी के दर्शनों के लिए जाया करते थे। इनको रास्ते में पड़ते ब्यास दरिया पारकर गोइंदवाल साहिब जाना पड़ता था। एक दिन घोड़ों का व्यापारी अलह यार खां काबुल से घोड़े खरीदकर दिल्ली वापिस आ रहा

था। जब यह ब्यास दरिया के किनारे पर पहुंचा तो ब्यास में पानी ज्यादा देखकर इसकी दरिया पार करने की हिम्मत न हुई। यह ब्यास दरिया के पत्तण पर रुककर पानी कम होने का इंतज़ार करने लगा ताकि उसके घोड़े सही सलामत दिल्ली पहुंच जाएं। अलह यार खां ब्यास दरिया के किनारे पर खड़ा सोच रहा था कि इतने समय में भाई पारो जुल्का जी दरिया पार करके गोइंदवाल साहिब चले गए। अलह यार खां दरिया के किनारे पर अभी योजनाएं ही बना रहा था कि भाई पारो जुल्का जी गुरु जी के दर्शन करके वापिस आ गए तथा दरिया में अपना घोड़ा ठेलने लगे तो अलह यार खां ने भाई साहिब से पूछ ही लिया कि आपको इतने पानी के खतरे से डर नहीं लगता? भाई साहिब ने जवाब दिया कि गुरु जी उनके अंग-संग हैं, इसलिए उनको डर नहीं लगता। भाई साहिब के विचार सुनकर अलह यार खां ने गुरु जी के दर्शनों की इच्छा प्रकट की। भाई पारो जी उसको गुरु जी के पास ले गए तो अलह यार खां गुरु जी की शख़्सियत तथा विचारों से प्रभावित होकर गुरु जी के पास ही रह गए तथा उसने घोड़े अपने पुत्र को देकर भेज दिया। गुरु जी ने इसकी सेवा-भावना से प्रभावित होकर इसको प्रचारक स्थापित कर दिया। गुरु जी ने भाई पारो जी द्वारा ही सबसे पहले ब्यास दरिया पर वैसाखी वाले दिन इकट्ठी होने वाली संगत को गुरमति का उपदेश देने के लिए गोइंदवाल साहिब में जुड़ने की प्रेरणा दी, जिसके फलत: सिक्ख मत में सबसे पहले वैसाखी का 'जोड़-मेला' श्री गोइंदवाल साहिब में शुरू हुआ। श्री गुरु रामदास जी के समय वैसाखी वाले दिन संगत श्री अमृतसर में जुड़ने लगी।

भाई पारो जुल्का जी की वंश में से भाई नरायण दास जी हुए हैं। भाई नारायण दास जी की पत्नी का नाम बीबी दया कौर था। इनके घर एक पुत्र भाई सुखराम दास तथा दो पुत्रियों-- बीबी रामो जी तथा बीबी दमोदरी जी का जन्म हुआ। बीबी रामो जी की शादी गांव डरोली के निवासी भाई माई दास जी से हुई और बीबी दमोदरी जी की शादी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के साथ संपन्न हुई। बीबी दमोदरी जी की कोख से बाबा गुरदित्ता जी, बाबा अणी राय जी तथा बीबी वीरो जी का जन्म हुआ। बीबी वीरो जी की शादी मुल्लापुर निवासी भाई साधू राम जी से हुई। बाबा गुरदित्ता जी की शादी बटाला निवासी भाई रामा सरीन जी की सुपुत्री बीबी अनंती देवी जी से हुई। इनके घर धीरमल्ल, बीबी रूप कौर तथा श्री गुरु हरिराय साहिब जी का जन्म हुआ। इस समय के दौरान वैसाखी को संगत गुरु साहिबान के दर्शनों को जुड़ती रही।

१७५६ बिक्रमी की वैसाखी (१६९९ ई) वाले दिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब में पांच प्यारों की सृजना की थी। इस दिन गुरु जी ने केसगढ़ साहिब वाले स्थान पर संगत को इकट्ठा होने के संदेश पहले ही भेज दिए थे। वैसाखी वाले दिन गुरु जी पाठ, कथा-कीर्तन के बाद पास ही बनाए विशेष तंबू (खेमे) में गए तथा संगत को संबोधित होकर कहा कि "आज मेरी कृपाण को सिरों की ज़रूरत है, कोई सिक्ख आए और अपना शीश भेंट करे।" "गुरबिलास" कृत भाई कुइर सिंघ के अनुसार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब कृपाण सूत सिर मांगे थे तो यह कहा था :

मनमुख सिख है कोई। सीस भेट गुर देवे कोई।

पूरे खेमे में चुप छा गई। कुछ समय बाद कथित क्षत्रिय बिरादरी से सम्बंधित भाई दया राम हाथ बांधकर शीश भेंट करने के लिए उठ खड़ा हुआ। भाई दया राम जी भाई पारो जुल्का जी

की वंश में से थे। भाई जुल्का जी की वंश में से भाई मइया राम जी श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के समय सिक्खी का प्रचार किया करते थे। भाई मइया राम जी की शादी भाई सुधा सिंघ की सुपुत्री बीबी सोभा देई से हुई। यह परिवार लाहौर में जाकर आबाद हो गया था। यहां ही इनके घर भाई दया राम जी का जन्म हुआ था। भाई दया राम जी बचपन से ही माता-पिता के साथ गुरु साहिब के दर्शनों के लिए जाया करते थे। भाई दया राम जी की शादी श्री गुरु नानक देव जी के ननिहाल गांव डेरा चाहल (पाकिस्तान) के निवासी भाई हकीकत चंद तथा माता हरी देई की सुपुत्री बीबी दिआली जी से हुई।

गुरु जी भाई दइआ राम जी को खेमे में ले गए। कुछ समय बाद गुरु जी हाथ में खून से लथपथ कृपाण पकड़े फिर मंच पर आए तथा फिर से सिर की मांग की। कथित जट्ट बिरादरी से सम्बंधित भाई धरम चंद जी शीश भेंट करने के लिए उठ खड़े हुए। यह हस्तनापुर से आए थे। इनके परिवार का सम्बंध बरनाला के समीप गांव सेखे के जवंदे गोत्र के सरदार त्रिलोके के साथ बताया जाता है। सेखे गांव के इर्द-गिर्द जवंदे जट्टों के २२ गांव थे। किसी प्राकृतिक आपदा के कारण या किसी हमले के कारण यह गांव तबाह हो गया जिस कारण यहां के बहुत-से निवासी यहां से उठकर हस्तनापुर (सैफपुर), मेरठ, उ. प्र. के इलाकों में चले गए।

गुरु जी ने खेमे से बाहर आकर तीसरी बार फिर शीश की मांग की। इस बार कथित नाई बिरादरी से सम्बंधित भाई साहिब चंद शीश भेंट करने के लिए हाज़िर हुए। ये बिदर से आए थे। "महान कोश" के कर्त्ता भाई कान्ह सिंघ नाभा ने भाई साहिब चंद के परिवार की पृष्ठभूमि ज़िला होशियारपुर के गांव नंगल शहीदों से जोड़ी है।

चौथी बार गुरु जी की मांग पर कथित झीवर बिरादरी से सम्बंधित भाई जोती राम/ गुलजारी तथा माता रामो जी/धंनो जी के पुत्र भाई हिंमत राय जी शीश भेंट करने के लिए गुरु जी के पास आ हाज़िर हुए। यह पुरी (जगन्नाथ) से आए थे। भाई कान्ह सिंघ नाभा ने इनके परिवार का सम्बंध पटियाला रियासत के गांव संगतपुरा से बताया है। आजकल यह गांव संगरूर ज़िले में है। गांव वालों के बताने के अनुसार भाई हिंमत राय जी की छोटी उम्र ही थी जब उनके माता-पिता अकाल चलाना कर गए थे। भाई हिंमत राय कोई आश्रय न होने के कारण बाहर रहते हुए गुरु नानक-नाम-लेवा सिक्खों के पास बिदर, उड़ीसा तथा जगन्नाथपुरी रहने लग गए।

गुरु जी के पांचवी बार मांग करने पर कथित छींबा (छीपा) बिरादरी से सम्बंधित भाई तीरथ राम/तीरथ चंद तथा माता सुखदेई/ देवांबाई के पुत्र भाई मोहकम चंद शीश भेंट करने के लिए आए। ये द्वारका से आए थे। भाई कान्ह सिंघ नाभा ने इस परिवार की पृष्ठभूमि बूड़ीए गांव की बताई है।

कुछ समय बाद गुरु जी शीश भेंट करने वाले पांच सिक्खों को नये सुंदर वस्त्र पहनाकर एवं नये शस्त्र धारण करवाकर संगत के सम्मुख ले आए। गुरु जी ने एक सरबलोह के बाटे (पात्र) में निर्मल जल डालकर उसमें खंडा फेरकर पांच बाणियों का पाठ करते हुए 'अमृत' तैयार करना शुरू किया। माता जीतो जी ने उसमें बताशे डाले। इस विधि से तैयार किया गया अमृत सबसे पहले गुरु जी ने पांच प्यारों को छकाकर फिर उनसे खुद अमृत छका। उस दिन इन पांच सिक्खों के रूप में खालसे का जन्म हुआ। गुरु जी ने इन सभी को जात-पात के

बंधनों से मुक्त करके इन सभी के नाम के साथ "सिंघ" शब्द लगाया। गुरु जी ने सारे भेद-भावों को मिटाकर सारी मानवता को एक समान समझने, आत्म-गौरव की भावना को सदा कायम रखने तथा सदा धर्म-युद्ध के लिए तैयार-बर-तैयार रहने का उपदेश दिया। गुरु जी ने खालसे के लिए पांच ककार-- कृपाण, केश, कड़ा, कंघा तथा कछहिरा की रहित के साथ बुरे कर्मों से दूर रहने तथा अच्छे कामों पर डटकर पहरा देने की रहित तैयार कर दी। देश के ज़ालिम शासकों का जुल्म सहन करके सांस सत्यहीन हो चुकी लोकाई में गुरु जी ने नयी ताकत भर दी। इससे भारतीयों की गुलाम मानसिकता चढ़दी कला में बदल गई तथा ज़ालिम प्रशासकों के विरुद्ध जन-संघर्ष उठ खड़ा हुआ। इसके बाद आगामी इतिहास की नुहार बदल गई। उस दिन से सिक्ख इतिहास में वैसाखी का दिन खालसे के जन्म-दिन के रूप में मनाया जाता है।

"गुर बिलास" के अनुसार गुरु जी ने कहा-- सदा उज्ज्वल वस्त्र पहनना, अल्प आहार, केशों की संभाल करनी तथा :

-दिजै दान भुखै, लहो जाइ पयारे।
दिवानं लगावै, सुने शबद सारे।
गुरू ग्रंथ जानो सदा अंग संग।
-जहां धरम साला तहां मीत जैये।
गुर दरस कीजै, महा मुख पैयै।
जपो वाहिगुरू जाप चीते सदा ही।
सदा नाम लीजै, गुरू गति गाहि।

खालसे की सृजना से पंजाब में एक नयी लहर का विकास होना शुरू हो गया। यह नयी लहर राजनीतिक लोगों को खतरा आभास होने लगी। इससे शासकों की मनमर्जियों में रुकावट पड़नी शुरू हो गई। बहुत-से पहाड़ी राजाओं तथा मुगल शासकों ने गुरु जी द्वारा सृजी लहर को दबाने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दया। इन सभी ने मिलकर श्री अनंदपुर साहिब को घेरा डाल लिया। गुरु जी के बहादुर सिंघों के समक्ष इनकी एक न चली। अपनी पराजय को देखते हुए इन्होंने गुरु जी के सामने कस्में खाकर गुरु जी को अनंदगढ़ खाली करने के लिए राज़ी कर लिया। गुरु जी ने इनकी झूठी कसमों पर एतबार करके १७०४ ई में अनंदगढ़ खाली कर दिया। गुरु जी का काफ़िला जब सरसा नदी के किनारे पहुंचा तो सरसा में भारी बाढ़ आई हुई थी। सरसा को पार करना कठिन था। पीछे से शाही सेना ने आकर गुरु जी के काफ़िले पर ज़ोरदार हमला कर दिया। गुरु जी का काफ़िला आपस में बिछुड़ गया। दोनों छोटे साहिबज़ादे तथा माता गुजरी जी सरहिंद की ओर चले गए। माताएं कुछेक सिंघों के साथ दिल्ली को चली गईं। दोनों बड़े साहिबज़ादे, पांच प्यारे तथा कुछेक सिंघों सहित गुरु जी कोटला निहंग से होते हुए चमकौर साहिब पहुंच गए। गुरु जी ने चमकौर साहिब में एक कच्ची गढ़ी में ठहरकर दुश्मन फौज का मुकाबला करने की जंगी योजना बनायी। मुट्ठी भर सिंघों की भारी संख्या की शाही सेना से जंग हुई। दोनों बड़े साहिबज़ादे-- बाबा अजीत सिंघ जी, बाबा जुझार सिंघ जी, पांच प्यारों में भाई मोहकम सिंघ जी, भाई हिंमत सिंघ जी एवं भाई साहिब सिंघ जी चमकौर साहिब की जंग में शहीदी पा गए। भाई साहिब सिंघ जी की वंश के लोग नंगल शहीदों में रहते हैं। रात को सिंघों ने पांच प्यारों के रूप में गुरु जी को गढ़ी छोड़ने का हुक्म कर दिया। पांच प्यारों का हुक्म मानकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने चमकौर साहिब की कच्ची गढ़ी छोड़ दी। गढ़ी में से निकलने से पहले गुरु जी ने अपनी योजना समझाते हुए भाई दया सिंघ जी, भाई धरम सिंघ जी तथा भाई मान सिंघ जी को

अलग-अलग दिशाओं में गढ़ी से बाहर निकलने के लिए समझाया। ये सभी जैकारे बुलाते अलग-अलग दिशाओं में गढ़ी में से निकल गए। शाही सेना में ऐसी अफरा-तफरी मची कि वे अंधेरे में आपस में लड़-मरने लगे। गढ़ी से निकलकर तीनों सिंघ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को माछीवाड़े जाकर मिले। माछीवाड़े में घोड़ों के व्यापारी गुरु जी के पुराने श्रद्धालु भाई गनी खां तथा भाई नबी खां ने गुरु जी की बहुत सेवा की। इन्होंने गुरु जी को वैरियों के खतरे से बाहर निकालने के लिए उनको नीले वस्त्र पहनाकर 'उच्च के पीर' के भेस में एक चारपाई की पालकी बनाकर ऊपर बैठा लिया। भाई गनी खां, भाई नबी खां, भाई धरम सिंघ जी तथा भाई मान सिंघ जी ने चारपाई को चारों पावों से कंधों पर उठा लिया तथा भाई दया सिंघ जी चंवर करने लगे। इस तरह ये सारे लुधियाना ज़िला के हेहर गांव की तरफ रवाना हो गए। गांव हेहर पहुंचकर गुरु जी ने भाई गनी खां तथा भाई नबी खां को हुकमनामा बख़्शिश करके वापिस भेज दिया।

संवत् १७६२ बिक्रमी में गुरु जी ने दीना कांगड़ के स्थान से औरंगज़ेब को एक फ़तहि (जीत) की चिट्ठी (ज़फरनामा) लिखी। गुरु जी ने इस चिट्ठी को औरंगज़ेब तक पहुंचाने के लिए भाई दया सिंघ जी की ज़िम्मेदारी लगाई। भाई दया सिंघ जी ने यह चिट्ठी बादशाह औरंगज़ेब के पास पहुंचाई तो वह पढ़कर बहुत दुखी हुआ :

जब दया सिंघ ने दयो जाइ।
पढ औरंग तरफ्यो दुख पाइ। (पंथ प्रकाश)

उस समय बादशाह ने फरमान लिखकर भाई दया सिंघ जी के साथ एक गुरजदार गुरु जी के पास भेजा :

गुरज़दार फुरमान लै दया सिंघ के संगि।
बिदा कीए ताही समै बादशाह औरंग ॥३९॥

यह फरमान था :

गुरज़ बरदार फ़रमान भेजा तबै सिंघ गोबिंद के पास जावै।
जोर कर बेनती जाइ ऐसे करो रहो तिह ठउर जहां जीव आवै ॥३८॥

(श्री गुरु सोभा, अध्याय १३)

भाई दया सिंघ जी वापिस गुरु जी के पास आ गए। गुरु जी दमदमा साहिब से दक्षिण की तरफ जा रहे थे तो बघोर पहुंचकर उनको बादशाह औरंगज़ेब की मृत्यु की ख़बर मिली। औरंगज़ेब के पुत्रों में तख़्त पर बैठने के लिए जंग छिड़ गई। गुरु जी ने बहादुर शाह की विनती पर उसकी मदद की। गुरु जी की मदद से बहादुर शाह की जीत हो गई तथा तारा आज़म मारा गया। कामबख़्श की बगावत को दबाने के लिए बहादुर शाह दक्षिण की तरफ चल पड़ा। उस समय गुरु जी भी उसके साथ चल पड़े। बहादुर शाह गुरु जी के साथ किए वायदों को पूरा करने से टाल-मटोल करने लग गया। गुरु जी बहादुर शाह के काफ़िले से अलग होकर नांदेड़ साहिब को चले गए। गोदावरी के किनारे पर गुरु जी ने माधो दास वैरागी को बाबा बंदा सिंघ बहादर बनाकर अपनी बख़्शिशें देकर पंजाब की तरफ जुल्म का नाश करने को भेजा। गुरु जी नांदेड़ साहिब में ज्योति-जोत समा गए। उस समय भाई दया सिंघ जी तथा भाई धरम सिंघ जी गुरु जी के पास थे। यहां नांदेड़ साहिब में ही भाई दया सिंघ जी १७६५ बिक्रमी में अकाल चलाना कर गए। भाई दया सिंघ जी का परिवार माता सुंदरी जी के पास दिल्ली में रहता रहा। भाई मनी सिंघ जी श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर की सेवा-संभाल के लिए श्री अमृतसर में आ गए तो इनके परिवार में से भाई जवाहर सिंघ जी भी श्री अमृतसर में आ गए। यह श्री दरबार साहिब, श्री

अमृतसर के ग्रंथी सिंघ के रूप में सेवा निभाते रहे। १७६८ बिक्रमी को भाई धरम सिंघ जी भी नांदेड़ में अकाल चलाना कर गए।

खालसे ने १८वीं सदी के पहले मध्य में ज़ालिम साम्राज्य का मुकाबला किया। अब्दुस समद खां, जकरिया खां तथा मीर मन्नू जैसे ज़ालिम प्रशासकों के जुल्म का कुर्बानियों से मुकाबला किया। सन् १७३३ ई की वैसाखी वाले दिन खालसा पंथ की चढ़त को महसूस करते हुए ज़करिया ख़ान द्वारा गुरु-पंथ को नवाबी की पेशकश की गई। सन् १७४७ ई के वैसाखी के दिवस पर इकट्ठा हुए खालसा पंथ द्वारा श्री अमृतसर में रामरौणी का कच्चा किला बनाने का फैसला किया गया। यह किला सिक्खों के लिए घोर संकट के समय पनाह का स्थान सिद्ध हुआ।

सन् १७४८ ई में वैसाखी वाले दिन का सिक्ख इतिहास में विशेष महत्त्व है। इस दिन सिक्खों ने "दल खालसा" की नींव रखकर यह फैसला किया कि आगे से सिक्खों के अलग-अलग जत्थे एक जत्थेबंदी अर्थात् "दल खालसा" के अधीन योजनाबंदी किया करेंगे। इन सभी जत्थों का जत्थेदार अर्थात् दल खालसे का जत्थेदार स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को स्थापित किया गया। इससे सिक्खों की शक्ति, जो अलग-अलग हिस्सों में बंटी हुई थी, एक जगह पर इकट्ठा हो गई। इस तरह जत्थेबंद होने के बाद सिक्खों ने बहुत जल्दी मुगलों, मरहट्टों तथा अहमद शाह अब्दाली की फौजों को करारी पराजय दी।

१७६२ ई. में 'बड़ा घल्लूघारा' घटित हो गया, जिसमें ३०००० से ज्यादा सिंघ शहादत का जाम पी गए। अहमद शाह अब्दाली ने श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर की इमारत को ढाह कर यह महसूस किया था कि अब सिक्ख सदियों तक नहीं उठ सकेंगे। इतने भारी नुकसान के बाद भी सिक्ख उठ खड़े हुए तथा उन्होंने १७६२ ई की वैसाखी वाले दिन श्री दरबार साहिब का नया निर्माण शुरू करके अल्प समय में ही श्री दरबार साहिब की नयी इमारत खड़ी कर दी। महाराजा रणजीत सिंघ ने वैसाखी वाले दिन लाहौर को जीतने के बाद राज्यगद्दी पर बैठने की रस्म अदा की।

पंजाबियों के लिए वैसाखी का त्योहार धार्मिक, सामाजिक, सभ्याचारक तथा राजनीतिक महत्त्व रखता है। देश की अंग्रेजों से आज़ादी की लड़ाई में भी इस दिन का विशेष महत्त्व है। इस दिन सन् १९१९ ई में जलियां वाला बाग का दुखदायक साका घटित हुआ, जिससे सारे देश में राष्ट्रवाद की भावना ने ज़ोर पकड़ लिया। १३ अप्रैल, १९७८ ई की वैसाखी वाले दिन नकली निरंकारियों द्वारा बड़ी संख्या में अपने पैरोकारों का इकट्ठ करके सिक्ख मत की परंपरायों को चुनौती देने के लिए श्री अमृतसर में जलूस निकाला गया। जलूस निकालने से पहले सिक्ख विरोधी अख़बारों में पूरे-पूरे पन्ने के इश्तिहार प्रकाशित करवाए गए। सिक्खों के दिलों को दुखाने वाली घटिया हरकतें करने में कोई कोर-कसर न छोड़ी गई। सिक्खों द्वारा सरकार को इस तरह की हो रही घटिया कार्यवाहियों के विरुद्ध सूचित करने पर भी कोई कार्यवाही न की गई। जब सिक्खों ने खुद इसका विरोध किया तो सिक्खों को इसका जवाब गोलियों के रूप में मिला। इस गोलीबारी में १३ सिंघ शहादत पा गए तथा ८० से ज्यादा ज़ख्मी हो गए। सिक्खों ने बता दिया कि सिक्ख पंथ के प्रति बुरी आंख रखने वालों के साथ खालसा कैसे जूझ सकता है। खालसा पंथ की इस बहादुरी के कारण पंथ में फूट डालने वालों की साजिशें धरी-धराई रह गईं। इसके बाद में भी सिक्खों को अपनी कद्रों-कीमतों तथा मर्यादा को बनाए रखने के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ा, जो निरंतर जारी है। 

खालसा : अद्‌भुत जीवन अवधारणा

*–डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

मनुष्य विकास की एक सदियों लंबी प्रक्रिया से गुज़रता हुआ परिवार और समाज जैसी संस्थाओं को प्राप्त कर सका है, जिससे उसकी जीवन-शैली निरंतर परिपक्व, संशोधित और समन्वित होती रही है। इस अनवरत प्रक्रिया में कुछ अच्छाइयां और कुछ बुराइयां सदैव उसके जीवन को प्रभावित करती रही हैं जो अंतत: परिवार और समाज के स्तर पर परिलक्षित होती आई हैं। इनके असंतुलन से समाज का चरित्र बनता-बिगड़ता रहा है। कलयुग में अच्छाइयां दुर्लभ होती गयीं जिससे मानव-जीवन की घोर कठिनाइयों का दौर आरंभ हो गया। जिन संस्थाओं और व्यक्तियों पर सच के पोषण का दायित्व था उन्होंने ही असत्य को प्राश्रय देना आरंभ कर दिया। जब बाड़ ही खेत को खाने लगे तो उसे कौन बचा सकता था! धर्म का अर्थ पाखंड, ढोंग व आडंबर हो गया। न्याय शक्तिशाली का दास बन गया। ईश्वर प्रभावशालियों के अधिपत्य का विषय बन गया और निर्बलों-निम्न माने जाने वाले वर्गों की पहुंच से दूर बना दिया गया। मनुष्यता जातियों, वर्गों, वर्णों में बंट गयी। मनुष्यों के स्वार्थी वर्ग ने खुद को ईश्वर बताना शुरू कर दिया और वे दाता व भाग्यविधाता बन बैठे। मानवता के क्षितिज पर झूठ और अन्याय का गुबार छा गया और विकारों ने मानवीय अंतर्मन को अपने प्रभाव से घोर अंधकार में डुबो दिया :

कलि होई कुते मुही खाजु होआ मुरदारु ॥
कूड़ु बोलि बोलि भउकणा चूका धरमु बीचारु ॥
(पन्ना १२४२)

उपरोक्त वचन में श्री गुरु नानक साहिब ने तत्कालीन परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए कहा कि धर्म को विस्मृत कर दिया गया है। इसके समाज पर पड़े कुप्रभाव का वर्णन भी गुरबाणी में कई स्थानों पर हुआ है, जिसकी एक सटीक चर्चा निम्न वचन में भी हुई है :

रंना होईआ बोधीआ पुरस होए सईआद ॥
सीलु संजमु सुच भंनी खाणा खाजु अहाजु ॥
सरमु गइआ घरि आपणै पति उठि चली नालि ॥
नानक सचा एकु है अउरु न सचा भालि ॥२॥
पउड़ी ॥ बाहरि भसम लेपन करे अंतरि गुबारी ॥
खिंथा झोली बहु भेख करे दुरमति अहंकारी ॥
साहिब सबदु न ऊचरै माइआ मोह पसारी ॥
अंतरि लालचु भरमु है भरमै गावारी ॥
नानक नामु न चेतई जूऐ बाजी हारी ॥
(पन्ना १२४३)

धर्म को एकदम नकार दिये जाने से पुरुषों और स्त्रियों का आचरण सारी मर्यादायें और शील-संयम का त्याग करके स्वेच्छाचारी हो गया। परमात्मा को विस्मृत करके माया-मोह को अपना लिया गया। वाह्य स्वरूप तो किसी श्रेष्ठ धर्मात्मा जैसा बना लिया गया किंतु अंतर विकारों और पाप-भावनाओं से भरा हुआ था। बुद्धि पर माया-मोह के गहरे विष का प्रभाव जीवन को सच के मार्ग से दूर ले गया और मनुष्य अपने वास्तविक लक्ष्य से भटक गया था।

इन अति विषम परिस्थितियों में श्री गुरु नानक देव जी का जन्म लेना एक ऐसे सूर्य की तरह था जिसके चमकीले प्रकाश ने एक ओर जहां संसार की बुराइयों को उजागर करके

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३*

सत् और असत् का भेद स्थापित किया वहीं मनुष्य के अंतर को जीवन के वास्तविक लक्ष्य की राह दिखाकर भ्रमों, संशयों से उबारकर, विकार-रहित व निर्मल बनाने का महान कार्य किया। समाज को सही दिशा दिखाने के लिए उन्हें हरिद्वार में पानी पूर्व दिशा के स्थान पर पश्चिम दिशा की ओर डालना पड़ा और मनुष्य के अंतर को प्रकाशित करने के लिए कुरुक्षेत्र में बीच बाज़ार चूल्हा जलाना पड़ा। इसी क्रम में मनुष्य और समाज की पूर्ण शुद्धता को अंतिम रूप से सुनिश्चित करने के लिए ऐसे ही कदम दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को भी उठाने पड़े जब उन्होंने अमृत को लोहे के बाटे में तैयार कर सर्वसुलभ बनाने का महान कार्य किया और दैवीय मानी जाने वाली खास शक्ति को हर गुरसिक्ख के मन और तन में भरपूर करके उसे "सवा लाख से एक लड़ाऊं" के योग्य बना दिया। आधार श्री गुरु नानक साहिब ने तैयार किया था जिस पर सच के महल का निर्माण श्री गुरु तेग बहादर साहिब तक सभी गुरु साहिबान ने अपने विचारों एवं त्याग, बलिदान और प्रेरणा से किया। इस महल को खालसा के नाम से आवृत्त करके श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उस पर सच्चे जीवन और समाज की शुद्धता का लेपन कर ऐसा स्वरूप संसार के सामने रखा जो अद्भुत ही नहीं व्यापक और वास्तविक चमत्कार की तरह था। सदियों से सहमे, डरे, निर्बल लोग सिर उठाकर चलने लगे और किसी पराक्रमी योद्धा की तरह रण-क्षेत्र में खडग चमकाने लगे। हाथ में धारदार खडग हो और मन में परमात्मा के प्रेम का मनोहारी सागर लहरा रहा हो, बाहर अस्त्रों-शस्त्रों से पूरी तरह से लैस बहुत बड़ी फौज घेरा डाल कर खड़ी हो और उनसे टकराने के लिए मात्र चालीस सिंघ पुरज़ोर उत्साह से भरे और बेताब नज़र आयें, घायल सिंघों को पानी पिलाने गया गुरसिक्ख दुश्मन-सेना के रण-भूमि में कराह रहे सैनिकों को भी उतने ही प्यार से पानी पिलाने लगे, इससे बड़ा चमत्कार और क्या हो सकता है? संसार में यह सत्य कर दिखाया श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने। सन् १७५६ बिक्रमी की वैसाखी के दिन श्री अनंदपुर साहिब में सजे हुए दीवान में शबद-कीर्तन के भोग के पश्चात गुरु जी ने अपनी कृपाण निकालकर जोश भरे स्वर में कहा कि "एक शीश की आवश्यकता है। मेरी कृपाण एक सिक्ख का शीश चाहती है। कोई है जो अपना शीश भेंट कर सके?" वास्तव में यह सच के मार्ग पर चलने योग्य होने की परीक्षा थी और इसे पास किए बिना न तो अंतर की शुद्धता पूर्ण हो सकती थी और न ही समाज इस दिशा में चलने योग्य बन सकता था। गुरु नानक साहिब ने पूर्व में ही स्पष्ट कर दिया था कि सच का मार्ग अत्यंत कठिन मार्ग है, जिस पर चलने के लिए स्वयं को पूरी तरह से सिद्ध करना पड़ता है, जैसे सोने की शुद्धता को कसौटी पर कसा जाता है, जिसके अत्यंत कठोर मानक होते हैं :

हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरमति ले हरि बोलि ॥
मनु सच कसवटी लाईऐ तुलीऐ पूरै तोलि ॥
कीमति किनै न पाईऐ रिद माणक मोलि अमोलि ॥
(पन्ना २२)

श्री गुरु नानक साहिब ने कहा कि मन को सच की कसौटी पर कसना होगा और इस पर पूरा खरा उतरना होगा। इससे अधिक मूल्यवान संसार में और कुछ भी नहीं है। मन की शुद्धता और सच से परिपूर्णता अनमोल है। इसे प्राप्त करके ही धर्म के मार्ग पर चला जा सकता है। गुरु साहिब ने कहा *"तुलिऐ पूरै तोलि"* अर्थात् मन की शुद्धता में तनिक भी संदेह नहीं होना चाहिए। सच धारण करने वाले गुरमुख के लक्षण भाई गुरदास जी ने भी गिनाए हैं :

सचु सोहै सिर पग जिउ कोझा कूड़ु कुथाइ

कछोटा।
सचु सताणा सारदूलु कुडु जिवै हीणा हरणोटा।
लाहा सचु वणंजीऐ कूड़ु कि वणजहु आवै तोटा।
सचु खरा साबासि है कूड़ु न चलै दमड़ा खोटा।
तारे लख अमावसै घोरि अनेरि चनाइणु होटा।
सूरज इकु चढ़ंदिआ होइ अठ खंड पवै फलफोटा।
कूड़ु सचु जिउं वटु घडोटा ॥ (वार ३०:७)

श्री गुरु नानक साहिब ने सच को अनमोल कहा तो भाई गुरदास जी ने इसे सिर पर शोभायमान पगड़ी जैसा बताया। उन्होंने सच को शेर के समान बलवान, पूर्ण विशुद्ध और सूर्य के समान प्रकाशित कहा। उन्होंने कहा कि सच सारे भ्रमों-संशयों को दूर कर देने वाला है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने वैसाखी के दिन जिस खालसा की साजना करके उसे मूर्त रूप प्रदान किया वह भाई गुरदास जी की इस व्याख्या पर हर तरफ से पूरा उतरने वाला है। वैसाखी के दिन अवतरित हुआ खालसा सच का प्रत्यक्ष स्वरूप था। जिस तरह सच को भाई गुरदास जी ने घोर अंधकार को चीरकर उजाला कर देने वाले सूर्य की संज्ञा दी वैसे ही खालसा ने अपने अस्तित्व में आते ही ऊंच-नीच, जात-पात, अमीर-गरीब की युगों से चली आ रही सारी दीवारों को एकबारगी धराशायी करके सभी को समान धरातल पर सिंघ बनाकर ला खड़ा किया। स्वयं गुरु साहिब ने पांच-प्यारों से अमृत छककर गुरु और चेले के बीच के भेद को भी मिटा दिया। इससे बड़ा सोच का बदलाव और कोई नहीं हो सकता। गुरु साहिब ने जब गुरसिक्ख को खालसा स्वरूप देकर सिंघ सजाया तो उन्हें श्री गुरु नानक साहिब की *"बाहरि भसम लेपन करे अंतरि गुबारी"* की बात भली-भांति स्मरण थी, इसी लिए वाह्य स्वरूप को अंतर अवस्था से जोड़ने में जरा भी ढील नहीं की। उन्होंने कहा कि जो उन्हें परमेश्वर कहेगा वह नरक का भागी होगा अर्थात् गुरसिक्खी के मार्ग से च्युत हो जायेगा और खालसा नहीं रहेगा। एक गुरु का अपने अनुयाइयों को अपने बारे में ऐसी वर्जना करना भी अभूतपूर्व तो था ही विनम्रता का चरम भी था जो अंतर की शुचिता से ही जन्म लेता है। इसे ही वे खालसा की पहचान बनाना चाहते थे। खालसा की साजना के साथ पांच ककारों का जुड़ना इस बात का निश्चित संकेत था कि वे एक ऐसा खालसा पंथ चाहते थे जो अंतर-तल पर भी उतना ही बलवान हो जितना तेग धारण करके वाह्य शक्ति से संपन्न। इसके लिए उन्होंने पांच ककारों में-- कड़ा, कछहिरा, कंघा, कृपाण और केश को अनिवार्य बना दिया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का मूल मंतव्य तो खालसा के परमात्मा के साथ सम्बंध को दृढ़ कराना था :

प्रानी परम पुरख पग लागो ॥
सोवत कहा मोह निंद्रा मै कबहूं सुचित ह्वये जागो ॥१॥रहाउ॥
औरन कहा उपदेसत है पसु तोहि प्रबोध न लागो ॥
सिंचत कहा परे बिखियन कह कबहु बिखै रस त्यागो ॥१॥
केवल करम भरम से चीनहु धरम करम अनुरागो ॥
संग्रह करो सदा सिमरन को परम पाप तजि भागो ॥२॥
जा ते दूख पाप नहि भेटै काल जाल के तागो ॥
जै सुख चाहो सदा सभन कौ तौ हरि के रस पागो ॥ (शबद रामकली पातशाही १०)

गुरु साहिब ने ऐसे खालसा की कल्पना को साकार किया जो सदा के लिए परमात्मा की शरण में चला जाए। वह सांसारिक मोह-माया और विकारों की निद्रा से जागकर अपने मूल कर्त्तव्य के प्रति सचेत हो जाये। खालसा ऐसा हो जो धर्म और मानवता के हितों की बड़ी-

बड़ी बातें करके पशुवत जीवन जीने के स्थान पर विकार रहित होकर शुद्ध आचरण से स्वयं को सिद्ध करे। वह प्रभु-सिमरन में सदा रमा रहे और परमात्मा की ऐसी कृपा प्राप्त करे कि उसके सारे दुख दूर हो जाएं और वह पाप-कर्मों से मुक्त हो जाये। वह संपूर्ण मानवता के हितों की चिंता करे और इसी में अपना सुख देखकर परमात्मा की स्तुति करे। खालसा सर्वहित को कैसे देखे, इसका प्रशिक्षण तो गुरु साहिब ने महज नौ वर्ष की आयु में ही अपने गुरु-पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब को कश्मीरी ब्राह्मणों के धर्म-संरक्षण हेतु बलिदान देने की सहमति देकर ही आरंभ कर दिया था। भूखे-प्यासे रहकर लंबे समय तक श्री अनंदपुर साहिब के किले में सच के लिए डटे रहकर खालसा ने इस सबक का अभ्यास किया और चमकौर साहिब की गढ़ी में साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी, साहिबज़ादा जुझार सिंघ जी के साथ अपने प्राणों का उत्सर्ग करके बलिदान की परंपरा की नई इबारत लिखी। खालसा बनने का उपदेश आचरण का ऐसा घोषणा-पत्र था, जिस पर स्वयं गुरु साहिब भी चले और उनका खालसा भी।

बिस्व को भरन हैं कि अपदा को हरन हैं
कि सुख को करन हैं कि तेज को प्रकाश हैं ॥
पाईऐ न पार पारावार हूं को पार जां को
कीजत बिचार सुबिचार को निवास हैं ॥

(अकाल उसतत)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के उपरोक्त वचन वैसे तो अकाल पुरख के संदर्भ में हैं किंतु उन्होंने जिस खालसा की साजना की उसे भी उन्हीं गुणों से भरपूर किया जिनके दर्शन गुरु साहिब ने खुद परमात्मा में किए। परमात्मा को गुरु साहिब ने संसार का पोषण करने वाला तथा दुखों को दूर करने वाला बताया। खालसा को भी उसी राह पर चलने के लिए तैयार किया। इसके लिए आवश्यक था कि राज्य, समाज और धर्म द्वारा निर्बल वर्ग के किए जा रहे शोषण पर विराम लगाया जाये और शोषित वर्गों को निराशा और हताशा की मनोदशा से निकाला जाए। इसके लिए गुरु साहिब ने उत्कृष्ट साहित्य की रचना की और ऐसे साहित्य-सृजन को प्रोत्साहित किया जिसने लोगों के मन में उत्साह का संचार करके मनोबल को ऊंचा किया। गुरबाणी के अनथक प्रवाह के साथ ही गुरु साहिब के दरबार में निरंतर ढाडी जत्थे वीर रस की वारों का गायन करते रहते थे। गुरु जी का सिक्खों को युद्ध-कला और अस्त्रों-शस्त्रों में भी बराबर प्रवीण करने पर ज़ोर होता था। गुरु साहिब गुरमति के प्रचार-प्रसार को लेकर भी पूरी तरह से सजग थे। श्री गुरु रामदास जी के समय से ही मसंद नियुक्त करने की परंपरा चली आ रही थी जो विभिन्न क्षेत्रों में गुरसिक्खी का प्रचार करते थे। बाद में वे स्वेच्छाचारी हो गए थे जिससे संगत परेशान थी। शिकायतें मिलने के बाद गुरु साहिब ने सारे मसंदों को मुश्कें बांध कर श्री अनंदपुर साहिब लाने और उनके सामने पेश करने का हुक्म दिया। मसंदों से उन्होंने उनके सारे अपराध कबूल करवाए और उचित सज़ायें भी दीं। इसके बाद गुरु साहिब ने मसंद-प्रथा को समाप्त कर दिया। गुरमति के मूल विचारों और आधार के प्रति गुरु साहिब इतने सतर्क थे कि उन्होंने सभी सिक्खों को अपने-अपने घरों में भी लंगर चलाने का हुक्म दिया था। रात्रि में वे स्वयं वेश बदलकर इन लंगरों की व्यवस्था की जांच किया करते थे और बाद में योग्य सुझाव दिया करते थे। इससे सिक्खों में जहां वीरता का भाव परिपूर्ण हो रहा था वहीं गुरमति के प्रति चेतना और आस्था भी दृढ़ हो रही थी।

जब गुरु साहिब को लगा कि सिक्ख परिपक्व हो गये हैं और एक बड़े उत्तरदायित्व को संभाल सकते हैं तब उन्होंने खालसा पंथ

साजने का फैसला किया। अमृत छककर खालसा बनना और पांच ककार धारण करके उनके योग्य साबित होना एक बड़े उत्तरदायित्व की तरह था। जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पांच प्यारों का चयन कर लिया और उन्हें अमृत छकाकर सिंघ सजा दिया तो एकत्र संगत को अपने भावपूर्ण संदेश में कहा कि खालसा को संतों जैसा पवित्र, धार्मिक, उपासक, परोपकारी और ईश्वर-भक्त बनना है और साथ ही शूरवीरों जैसा दिलेर, निर्भय, बलवान और योद्धा भी। कमज़ोरों, अनाथों, दुखियों और शोषितों, बेसहारों, अपमानितों को सहारा देकर उनकी व्यथा को दूर करना है। किसी पर अन्याय नहीं करना, किसी को भयभीत नहीं करना किंतु किसी का अन्याय सहना भी नहीं है और खामोश न बैठकर अन्याय को होने भी नहीं देना है। गुरु साहिब ने अपने लंबे संबोधन में यह भी कहा कि किसी का भय नहीं मानना, कितने भी कष्ट सहने पड़ें अपने धर्म से विचलित नहीं होना। गुरु साहिब ने अन्य बातों के अतिरिक्त खास तौर से कहा कि हक-हलाल की कमाई करनी है, बांटकर खाना है, गुरबाणी का भाव मन में बसाकर जीवन को गुरसिक्खी के सच्चे स्वरूप में ढालकर एक आदर्श इंसान के रूप में संसार में विचरना है। संसार में कदाचित ऐसा आदर्श मनुष्य बनना सबसे कठिन और एक साधना जैसा है। ऐसा आदर्श मनुष्य बनना है जो धर्म के विचार को धारण भी करे और उसका क्रियान्वन भी करे; धर्म पर हर हाल में अडिग भी रहे और अन्याय को देखकर चुप न रहे, उसे समाप्त करे। ऐसा आदर्श मनुष्य निर्बलों का सहारा बने और उनकी निर्बलता को दूर भी करे। गुरु साहिब ने खालसा को एक ऐसे आदर्श मनुष्य के रूप में तैयार किया जो धर्म की क्रियाशीलता का प्रतीक हो। धर्म जो सदियों से पूजा-अर्चना और धर्म-ग्रंथों व पूजा-स्थलों का विषय मान लिया गया था उसे खालसा के माध्यम से दैनिक व्यवहार का मानक बना दिया जाना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का अचंभित कर देने वाला महान परोपकार था, जिससे सृष्टि की रचना को संपूर्णता प्राप्त होती दिखाई दी। सुंदर सृष्टि की रचना परमात्मा ने आनंदपूर्ण क्षणों में ही की होगी और इस सृष्टि में श्री अनंदपुर साहिब बनाने का कार्य खालसा ही कर सकता था। श्री अनंदपुर साहिब बनाने के लिए अन्याय का नाश भी आवश्यक था जिसके लिए खालसा को योद्धा बनाकर पहली बारी राजसी सत्ता और धर्म-समाज की शक्ति को इतनी कड़ी चुनौती दी गई जो स्वार्थ-रहित और शुभ भावना से परिपूर्ण चुनौती थी। गुरु साहिब का खालसा के लिए हर परिस्थिति में निश्चित और एक ही संदेश था-- धर्म के विचार पर टिके रहना। धर्म से विमुख होने के प्रति गुरु साहिब ने कड़ी चेतावनी दी थी :

जो अपने गुर ते मुख फिरहैं ॥
ईहां उहां तिन के ग्रिह गिरिहैं ॥
इहां उपहास न सुर पुर बासा ॥
सभ बातन ते रहै निरासा ॥ (बचित्र नाटक)

परमात्मा ने सृष्टि की रचना की, जीव-जंतु, वनस्पतियां, नदियां, सागर, पहाड़ बनाये और मनुष्य बनाया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा बनाकर मनुष्य को पूर्णता प्रदान करने और संसार को परमात्मा के अनुकूल बनाने का महान उपकार किया। खालसा एक आदर्श अवस्था है, मानवीय मूल्यों के संरक्षण और पोषण की जिसका कोई समतुल्य नहीं है। आज इस बात को गहराई से समझने की आवश्यकता है।



खंडे-बाटे के अमृत का कमाल

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की जीवन-कथा बड़ी न्यारी है। गुरु जी के खंडे-बाटे के अमृत ने सिक्खों में ऐसी भावना भर दी थी कि वे धर्म के लिए खुद को न्यौछावर करने से ज़रा भी नहीं डरते थे। जिस मृत्यु से पूरा संसार डरता है, गुरु के सिंघ उसको प्राप्त कर प्रसन्नता महसूस करते हैं।

इसी संदर्भ में भाई डल्ला की साखी प्रस्तुत की जा रही है। श्री मुकतसर साहिब के युद्ध के उपरांत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तलवंडी साबो आ गए। यहां का चौधरी भाई डल्ला था जो लगभग २० गांवों का जागीरदार था। उसने अपने पास आत्म-रक्षा के लिए जवान भी रखे हुए थे। भाई डल्ला गुरु जी के पास आया, दर्शन किए। भाई डल्ला गुरु जी की पूरी जीवन-कथा पहले ही सुन चुका था। श्री गुरु तेग बहादर साहिब, चारों साहिबज़ादों, माता गुजरी जी और अन्य हज़ारों सिंघों को शहीद हुए वो सुन चुका था। उसने गुरु जी के साथ शोक व्यक्त करते हुए कहा : "गुरु जी! मेरे पास बहुत शक्तिशाली जवान हैं। ये मरने से नहीं डरते। आपने जीवन में बहुत कष्ट सहे हैं। अगर आप मुझे युद्ध के मैदान में याद करते तो मेरे बहादुर जवान दुश्मनों का सर फोड़ देते और आपको इतने कष्ट न सहने पड़ते।"

गुरु जी भली-भांति समझ गए कि कुछ गांवों पर जागीरदारी करके भाई डल्ला को अपने जवानों का अभिमान हो गया है। यह सुनकर गुरु जी शांत रहे।

कुछ ही दिनों के बाद एक सिंघ ने गुरु जी के दरबार में हाज़िर होकर एक नई बंदूक भेंट की। उसने इस बंदूक की बहुत प्रशंसा की। पास में भाई डल्ला भी बैठे हुए थे। गुरु जी ने भाई डल्ले का भ्रम दूर करने हेतु कहा : "भाई डल्ला! लाओ कोई अपना जवान, इस बंदूक से गोली चलाकर उसकी हिम्मत की परख करें।"

भाई डल्ला के जवानों ने गुरु जी का वचन सुना तो वे चकित रह गए। भाई डल्ला ने सभी जवानों की तरफ देखा। सभी ने सिर नीचे कर लिया। सभी ने इंकार कर दिया। भाई डल्ला ने मन में ग्लानि महसूस करते हुए कहा : "गुरु जी! बंदूक को ही परखना है, किसी जानवर पर भी परख की जा सकती है। इन कीमती जवानों की जान लेने की क्या ज़रूरत है?" गुरु जी ने कहा, "इस बंदूक की परख केवल किसी शूरवीर के ऊपर ही करनी है। अपना कोई जवान बुलाओ !" भाई डल्ला का कोई जवान न उठा। गुरु जी मुस्कराए और कहा, "भाई डल्ला! यही हुक्म मेरे सिंघों को सुनाओ।" भाई डल्ला भी यही देखना चाहता था कि क्या गुरु जी के सिंघ ऐसी मृत्यु को स्वीकार करते हैं। उसने तुरंत जाकर गुरु जी का हुक्म गुरु जी के सिघों को जा सुनाया। गुरु जी का हुक्म दो सिंघों-- भाई वीर सिंघ और भाई धीर सिंघ ने पहले सुना तो वे तुरंत दौड़ कर गुरु जी के पास आ गए।

**गांव : कैले कलां, डाक : घुम्मण कलां, ज़िला : गुरदासपुर-१४३५१८; फोन : ९८५५८५१०१४*

एक ने कहा, "गुरू जी! मैं नज़दीक था। आप जी का हुक्म पहले मैंने सुना था, इसलिए बंदूक को मेरे पर परखा जाए।"

दूसरे ने कहा, "नहीं गुरु जी! पहले मैं दौड़ा था, इसलिए बंदूक की परख मेरे पर की जाए।"

गुरु जी ने उनकी श्रद्धा और प्रेम को देख कर हुक्म किया, "दोनों ही आगे-पीछे कतार में खड़े हो जाओ।" एक ने कहा, "गुरु जी! आगे मैं हूंगा।" दूसरा कहे, "आगे मैं हूंगा।" दोनों सिंघ बराबर खड़े हो गए। जब गुरु जी बंदूक का मुंह ऊंचा करते तो वो दोनों अपने पांवों की एड़ियां उठा लेते। जब गुरु जी बंदूक का मुंह नीचा करते तो वे घुटने टेक कर नीचे हो जाते।

यह सब कौतुक भाई डल्ला अपनी आंखों से देखकर हैरान हो रहा था। सिंघों का दृढ़ विश्वास और हिम्मत देखकर भाई डल्ला का पसीना छूट गया। ऐसी परख उसने न तो कभी सुनी थी और न ही देखी थी। अंत में गुरु जी ने दोनों सिंघों के सिर के ऊपर से गोली निकाल दी। दोनों शूरवीर सिंघ निर्भय होकर खड़े रहे। गुरु जी ने दोनों सिंघों को शाबाश दी और आशीर्वाद देकर कहा, "बंदूक के साथ-साथ तुम दोनों भी परीक्षा में पास हुए हो।"

भाई डल्ला का अपने बहादुर जवानों वाला अभिमान टूट गया था। वो अति शर्मसार हुआ। गुरु जी ने कहा, "भाई डल्ला! देख लिए असली जवान। अगर धर्म-युद्ध के लिए जूझना है तो ऐसे जांबाज़ जवानों की ज़रूरत है। ऐसी शक्ति केवल खंडे-बाटे का अमृत छककर ही प्राप्त होती है।"

भाई डल्ला ने गुरु जी से क्षमा मांगी। वो गुरु जी की संगत और गुरु जी के वचनों से बहुत प्रभावित हुआ। उसको वास्तविक जीवन की समझ पड़ गई। गुरु जी ने उसको समझाया कि खंडे-बाटे का अमृत व्यक्ति में जुझारू (जूझने वाला) स्वभाव पैदा करता है। इसके अलावा धर्म की किरत, सेवा, परोपकार, दया, की शिक्षा गुरबाणी से मिलती है, जो मनुष्य को नेक इंसान बनाती है। वो बेगाना हक नहीं खाता, गरीब-मार नहीं करता, अपने गुरु पर संपूर्ण भरोसा रख कर श्वास-श्वास नाम-सिमरन में लगा रहता है। अभिमान को प्रभु के दर पर कोई स्थान प्राप्त नहीं है। भाई डल्ला ने गुरु जी से विनती की कि "मेरे ऊपर भी ऐसी कृपा करो, जैसी आपके सिक्खों पर है।" गुरु जी का हुक्म मान कर भाई डल्ला ने अपने परिवार और अपने जवानों समेत खंडे-बाटे का अमृत-पान किया और भाई डल्ला सिंघ बन गया।





कविता

खालसा पंथ के वीर

-डॉ. कशमीर सिंह 'नूर'*

*रखते हैं दुनिया में ऊंची शान, खालसा पंथ के वीर।
घटने न दें अपना स्वाभिमान, खालसा पंथ के वीर।
गुरु की मौज से सजी फौज बताएं, खालसा पंथ के वीर।
गुरु की सेवा में सारी उम्र बिताएं, खालसा पंथ के वीर।
निभाएं पूर्ण गुरु-मर्यादा का विधान, खालसा पंथ के वीर।
रखते हैं दुनिया में ऊंची शान, खालसा पंथ के वीर।
नाम खालसा पंथ का ऊंचा करते, खालसा पंथ के वीर।
धर्म के लिए जूझने से नहीं डरते, खालसा पंथ के वीर।
दे देते हैं धर्म के लिए जान, खालसा पंथ के वीर।
रखते हैं दुनिया में ऊंची शान, खालसा पंथ के वीर।
स्वाभिमान से जीने का जज़्बा सिखाते, खालसा पंथ के वीर।
जुल्म के आगे न झुकने की दृढ़ता दिखाते, खालसा पंथ के वीर।
हक-सच के लिए हो जाते कुर्बान, खालसा पंथ के वीर।
रखते हैं दुनिया में ऊंची शान, खालसा पंथ के वीर।
खालसे का केसरी निशान झुलाते, खालसा पंथ के वीर।
खालसाई रंग में हैं रंगे जाते, खालसा पंथ के वीर।
खालसा-रूप की खास पहचान, खालसा पंथ के वीर।
रखते हैं दुनिया में ऊंची शान, खालसा पंथ के वीर।
नि:सहायों की सहायता हैं करते, खालसा पंथ के वीर।
दुखियों के दुख और दर्द हरते, खालसा पंथ के वीर।
करें अद्वितीय सेवा का काम महान, खालसा पंथ के वीर।
रखते हैं दुनिया में ऊंची शान, खालसा पंथ के वीर।
शान से गुरु के मेलों में जाते, खालसा पंथ के वीर।
गतका, घुड़सवारी के जौहर दिखाते, खालसा पंथ के वीर।
युद्ध-कौशल से करें सबको हैरान, खालसा पंथ के वीर।
रखते हैं दुनिया में ऊंची शान, खालसा पंथ के वीर।
नगाड़े की गूंज से आसमां गुंजा दें, खालसा पंथ के वीर।
हौसले बुलंदियों पे सबके पहुंचा दें, खालसा पंथ के वीर।
गुरु के जैकारे बुलाते साथ शान, खालसा पंथ के वीर।
रखते हैं दुनिया में ऊंची शान, खालसा पंथ के वीर।
हर मुश्किल को आसान कर देते, खालसा पंथ के वीर।
हर बुज़दिल में जोश भर देते, खालसा पंथ के वीर।
निराली रखें आन, बान व शान, खालसा पंथ के वीर।
रखते हैं दुनिया में ऊंची शान, खालसा पंथ के वीर।*

*बी-एक्स ९२५, मुहल्ला संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०

गुरबाणी चिंतनधारा : ९०

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

इक्कीसवीं असटपदी

सलोकु ॥ सरगुन निरगुन निरंकार सुंन समाधी आपि ॥
आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जापि ॥
(पन्ना २९०)

२१वीं असटपदी के सलोक में गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी परमेश्वर की समस्त रूपों में व्यापकता का ज़िक्र करते हुए एक रहस्य का भी उद्घाटन करते हैं कि सभी रूपों में समाए हुए परमेश्वर की आराधना भी स्वयं उसी के द्वारा ही हो रही है।

गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि निराकार माया के तीनों रूपों में समाया हुआ सगुण रूप (जगत रूप) भी परमेश्वर खुद है तथा माया के त्रिगुणी प्रभाव से रहित (जगत-रचना से परे) निर्गुण रूप भी वो खुद ही है। शून्य अवस्था में समाधिलीन अर्थात् जहां किसी प्रकार की कामना की भाव-लहरियां या तरंगें किसी भी स्थिति में नहीं उठती उस परमावस्था में टिका हुआ भी परमेश्वर खुद ही है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि यह सारी जग-रचना परमेश्वर ने ही की है अर्थात् संपूर्ण रचना का मालिक वह खुद ही तो है। सृष्टि का सृजनहार अकाल पुरख परमेश्वर इस रचना में खुद विराजमान होकर अपनी आराधना भी आप ही कर रहा है।

कहने से तात्पर्य, अकाल पुरख परमेश्वर आप ही हर रंग-रूप में समाया हुआ है। इस जग-रचना में विद्यमान होते हुए कहीं वह सगुण स्वरूप है तो कहीं माया के त्रिगुणी प्रभाव से परे होने के कारण निर्गुण स्वरूप है। जापु साहिब बाणी में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी ईश्वर की समस्त रूपों में विद्यमानता एवं निर्लेपता को उजागर किया है। उसके निर्गुण-सगुण रूपों को नमन करते हुए गुरु कलगीधर पातशाह उसके आश्चर्यजनक स्वरूपों को नत्मस्तक हो विस्माद में आकर गायन करते हैं :

नमसतं अजाते ॥ नमसतं अपाते ॥
नमसतं अमजबे ॥ नमसतसतु अजबे ॥१७॥

यही नहीं, अकाल उसतत में गुरु पातशाह परमेश्वर के निराकार स्वरूप में से अद्भुत ढंग से साकार स्वरूप की विद्यमानता के दर्शन करवाते हैं :

एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान
खाक बाद आतस औ आब को रलाउ है ॥
अलह अभेख सोई पुरान औ कुरान ओई
एक ही सरूप सभै एक ही बनाउ है ॥८६॥

परमेश्वर की सुन्न समाधि की अवस्था का ज़िक्र गुरबाणी में अन्यत्र भी हुआ है। जब इस संसार की रचना नहीं हुई थी, प्रभु तो तब भी मौजूद था। अरबों-खरबों वर्षों से भी अधिक समय तक धुंध रूपी अंधकार बना रहा। उस समय न धरती थी, न आकाश था; न दिन, न रात, न चंद्र, न सूर्य था। केवल प्रभु का हुक्म ही व्याप्त था। परमेश्वर सुन्न समाधि में लीन था। न जीवन के साधन, न वाणी, न हवा, न पानी, न नाश, न ही आवागमन था। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, जती, सती, तपस्वी, धर्म,

२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

कर्म, पूजा, पाठ, निंदा, स्तुति आदि कुछ भी तो नहीं था :

अरबद नरबद धुंधूकारा ॥
धरणि न गगना हुकमु अपारा ॥
ना दिनु रैनि न चंदु न सूरजु सुंन समाधि लगाइदा ॥ . .
जप तप संजम ना ब्रत पूजा ॥
ना को आखि वखाणै दूजा ॥
आपे आपि उपाइ विगसै आपे कीमति पाइदा ॥
(पन्ना १०३५)

कहने से अभिप्राय, हर रूप में परमेश्वर समाया हुआ है। परमेश्वर सृष्टि-रचना से पूर्व भी था, वर्तमान में भी है तथा इस सृष्टि-रचना के विनिष्ट हो जाने के बाद भी कायम रहेगा।

असटपदी ॥
जब अकारु इहु कछु न द्रिसटेता ॥
पाप पुंन तब कह ते होता ॥
जब धारी आपन सुंन समाधि ॥
तब बैर बिरोध किसु संगि कमाति ॥
जब इस का बरनु चिहनु न जापत ॥
तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥
जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥
तब मोह कहा किसु होवत भरम ॥
आपन खेलु आपि वरतीजा ॥
नानक करनैहारु न दूजा ॥१॥

२१वीं असटपदी की पहली पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने पमेश्वर की सुन्न समाधि में स्थिर एवं अडोल अवस्था का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है कि जब उसकी मौज में यह रचना नहीं रची गई थी तब किसी तरह के पाप-पुण्य की कोई गुंज़ाइश ही नहीं थी और न ही किसी प्रकार के दुख-सुख की स्थिति थी। सब कुछ का कर्त्ता वह खुद है। उसकी मौज में ही यह रचना रची गई है और उसी की मौज में ही विनिष्ट हो जायेगी।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि जब ईश्वर ने इस सृष्टि के जीवों को साकार नहीं किया था अर्थात् जब सांसारिक जीवों की कोई शक्ल (आकृति) नहीं दिखाई देती थी, तब पाप या पुण्य-कर्म किससे हो सकता था? जब परमेश्वर स्वयं ही सुन्न समाधि (शून्य अवस्था में लीन) था, ऐसी अवस्था की धारणा में तब कोई किसी के साथ वैर-विरोध कैसे कर सकता था ? जब इस संसार का कोई रंग-रूप ही नहीं था अर्थात् इस जगत में कोई आकृति दिखाई नहीं देती थी तब हर्ष या शोक कैसे हो सकता था? जब केवल और केवल परमेश्वर ही आप मौजूद था तब कौन मोह-ग्रस्त हो सकता था और भ्रम-भुलेखों में कौन गलतान हो सकता था ? यह सृष्टि-रचना हरि ने आप ही की है। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह स्पष्ट करते हैं कि इस जग-रचना का रचयिता कोई और नहीं बल्कि प्रभु स्वयं है।

उपरोक्त पउड़ी में सलोक के भाव को ही विस्तृत रूप में गुरु पंचम पातशाह ने अभिव्यक्ति दी है। यह जगत-रचना परमेश्वर का रचा हुआ खेल-तमाशा है और यह खेल खिलाने वाला तथा दिखाने वाला भी परमेश्वर खुद ही है।

वास्तव में इस पउड़ी में गुरु साहिब ने जगत-रचना के पूर्व के दृश्य को साकार किया है कि जगत एवं जगत के जीवों के बिना पाप और पुण्य-कर्म की कल्पना ही नहीं हो सकती। जब कर्म करने वाला ही नहीं तब अच्छे और बुरे कर्म का सवाल ही नहीं उठाया जा सकता। इस जगत-रचना से पूर्व न दुख-सुख था, न ही वैर-विरोध था और न मोह की कोई परिकल्पना थी। यह सब तो तभी संभव होता है जब सृजना होती है, जन्म और मृत्यु का सिलसिला चलता है, कर्मों का खेल और उसका फल मिलना शुरू होता है। इससे पूर्व तो केवल और केवल सदा

स्थिर गुणों का मालिक परमेश्वर खुद ही सुन्न समाधि में लीन था। गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी भाव के दर्शन होते हैं कि न कोई कर्म-धर्म था, न माया का प्रसार था। जाति-जन्म कहीं दृष्टिगत नहीं होता था। न ममता का जाल था। जब परमेश्वर को अच्छा लगा उसने यह विस्तृत रचना रच दी और बिना किसी शक्ति के संसार के इस फैलाव को स्थिरता प्रदान की :

करम धरम नही माइआ माखी ॥
जाति जनमु नही दीसै आखी ॥ . .
जा तिसु भाणा ता जगतु उपाइआ ॥
बाझु कला आडाणु रहाइआ ॥ (पन्ना १०३५)

अकाल पुरख जगत-रचना की मौज से पूर्व भी बेअंत था, जगत-रचना के बाद भी बेअंत है। उसके हुक्म में यह सृजना हुई है और उसी के हुक्म में यह समाप्त हो जाएगी। परमेश्वर तब भी बेअंत रहेगा। उसका भेद न कोई जान सका है और न ही कोई जान सकेगा।

जब होवत प्रभ केवल धनी ॥
तब बंध मुकति कहु किस कउ गनी ॥
जब एकहि हरि अगम अपार ॥
तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥
जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ ॥
तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ ॥
जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥
तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥
आपन चलित आपि करनैहार ॥
नानक ठाकुर अगम अपार ॥२॥

दूसरी पउड़ी में भी गुरु साहिब ने ईश्वर को अपार, अनंत, बेअंत मानते हुए इंद्रियों की पहुंच से परे अगम्य रूप वर्णित किया है और उसी भाव को विस्तार दिया है कि जगत-रचना से पूर्व किसी गुण-दोष की परिकल्पना नहीं थी।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि जब केवल और केवल हरि ही मालिक था तब बताओ किसे बंधन-युक्त तथा किसे बंधन-मुक्त मानोगे? तब न ही कोई किसी तरह के बंधनों में जकड़ा था और न ही कोई बंधनों से आज़ाद था। जब अगम्य तथा बेअंत प्रभु केवल आप ही आप था अर्थात् ऐसा मालिक जिस तक न तो किसी की पहुंच हो सकती थी और न ही जिसका अंत पाया जा सकता था। जब एकमात्र ऐसा प्रभु मौजूद था तब नरक में कौन जाता और स्वर्ग में कौन जाता? जीव-रचना के बिना कर्म नहीं था और कर्म-बंधनों के बिना नरक या स्वर्ग की परिकल्पना भी नामुमकिन थी। जब प्रभु ने माया की रचना ही नहीं की अर्थात् जब वह माया-रहित निर्गुण-निरंकार अपनी सहज अवस्था में स्थित था, तब कहां थे जीव और कहां थी माया? तब न शिव था और न ही शक्ति थी। जब निराकार प्रभु अपने ज्योति-स्वरूप में ज्योतिमय था अर्थात् अपने नूर से आलोकित था तब भय से मुक्त कौन था तथा भय से युक्त कौन था? अंतिम पंक्ति में गुरु पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि परिपूर्ण परमेश्वर अगम्य एवं अनंत है। अपने कौतुक वह आप ही करने वाला है।

वास्तव में कर्म-बंधनों के बिना तो स्वर्ग एवं नरक की परिकल्पना भी हास्यस्पद लगती है। जब जीव-रचना नहीं तो अच्छे और बुरे कर्म नहीं हो सकते। जैसे बिना बादलों के बरसात नहीं हो सकती ठीक वैसे ही बिना जीव के अच्छे या बुरे कर्म नहीं हो सकते। बिना अच्छे या बुरे कर्मों के स्वर्ग और नरक में कोई कैसे जा सकता है? दंड और पुरस्कार की प्रक्रिया कर्म पर ही तो निर्भर करती है। बिना कर्म के फल की संभावना ही नहीं हो सकती। प्रभु की जगत-रचना से पूर्व की तस्वीर को गुरु

साहिब ने अनेक विलक्षण उदाहरणों से प्रस्तुत किया है।

अबिनासी सुख आपन आसन ॥
तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ॥
जब पूरन करता प्रभु सोइ ॥
तब जम की त्रास कहहु किसु होइ ॥
जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥
तब चित्र गुपत किसु पूछत लेखा ॥
जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे ॥
तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे ॥
आपन आप आप ही अचरजा ॥
नानक आपन रूप आप ही उपरजा ॥३॥

तीसरी पउड़ी में भी गुरु पातशाह ने फरमाया है कि परमेश्वर ने जब सृष्टि की सृजना नहीं की थी तब किसी के कर्मों का लेखा-जोखा पूछने वाले चित्रगुप्त का कोई काम नहीं था। प्रभु ही आश्चर्य रूप में था।

गुरु पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि जब अविनाशी परमेश्वर निज स्वरूप में, अडोल अवस्था में, अपनी ही मौज में विद्यमान था, तब जन्म-मृत्यु, विनाश की लीला कैसे और किसकी हो सकती थी? जब पूर्ण सृजनहार प्रभु आप ही था, तब मौत का भय बताओ किसे हो सकता था ? कहने से अभिप्राय, जहां किसी का जन्म ही नहीं हुआ वहां मृत्यु का डर कैसा? जन्म के बिना मृत्यु की कल्पना नहीं हो सकती। जब अदृश्य, अगम, अगोचर प्रभु केवल आप ही था तब चित्रगुप्त बताओ किससे लेखा-जोखा (कर्मों का हिसाब-किताब) पूछ सकता था? जब माया के प्रभाव से रहित, अथाह और अगोचर (जिस तक इंद्रियों की पहुंच न हो) प्रभु ही मौजूद था। उस समय न कोई माया के बंधनों में बंधा हुआ था और न ही कोई मुक्त था। ईश्वर खुद ही आश्चर्य-स्वरूप है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि (अनंत गुणों का मालिक) प्रभु स्वयं से ही प्रकट हुआ है अर्थात् अपने आकार को घड़ने वाला वह खुद ही है।

उपरोक्त पउड़ी में परमेश्वर को अनंत-बेअंत कहा गया है और उसके स्वयं से प्रकाशवान स्वरूप का भी अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह द्वारा वर्णन किया गया है। गुरबाणी में अन्यत्र भी जन्म-मृत्यु से परे अकाल स्वरूप ईश्वर के दर्शन होते हैं :

ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ ॥ (पन्ना १५२)

परमात्मा स्वयं से प्रकाशवान है, आवागमन से पूर्णतया सत्य है। परमात्मा को अनंत-बेअंत गुणों का मालिक कहकर धर्म-ग्रंथों में मनीषियों द्वारा उसके अजब कौतुकों को अपने-अपने ढंग से बयान किया गया है। मुकम्मल रूप से परमात्मा के गुणों को बयान न कोई कर सका है और न ही कोई कर सकेगा। असीम परमेश्वर को ससीम (एक सीमा में बद्ध) व्यक्ति वर्णन नहीं कर सकता। ईश्वर का अंत पाना मनुष्य का उद्देश्य (मनोरथ) भी नहीं है, बल्कि परमात्मा का गुणगान करते हुए अपने बेशकीमती जीवन को सफल बनाने का उपदेश दिया गया है।

जह निरमल पुरखु पुरख पति होता ॥
तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥
जह निरंजन निरंकार निरबान ॥
तह कउन कउ मान कउन अभिमान ॥
जह सरूप केवल जगदीस ॥
तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥
जह जोति सरूपी जोति संगि समावै ॥
तह किसहि भूख कवनु त्रिपतावै ॥
करन करावन करनैहारु ॥
नानक करते का नाहि सुमारु ॥४॥

चौथी पउड़ी में भी गुरु साहिब ने परमात्मा की उपमा करते हुए इस जगत-रचना से पूर्व की स्थिति को सुंदर उदाहरणों द्वारा

अभिव्यक्त किया है कि जब ज्योति स्वरूप मालिक अपनी ज्योति में समाया हुआ था तब किसी कर्म और उसके फल की कल्पना नहीं थी।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि जब केवल वह निर्मल पुरुष, नरों में श्रेष्ठ (जीवों का मालिक) प्रभु खुद ही था, जो कि पूर्णतया मैल रहित था, तो फिर कोई कौन किसी की मैल धोता? जहां केवल माया-रहित, आकार-रहित तथा वासना-रहित प्रभु विद्यमान था वहां अन्य किसका मान-सम्मान हो सकता था और किसका अपमान? जहां केवल ईश्वर ही था, तो वहां किसी से कोई छल-कपट कैसे कर सकता था? वहां पर कपट और ऐब किसे लग सकते थे? जब ज्योति स्वरूप परमेश्वर खुद अपनी ज्योति (नूर) में ही समाया हुआ था तब किसे माया की भूख हो सकती थी और किसे तृप्त माना जा सकता था? निरंकार ही सब कुछ करने एवं जीवों से करवाने वाला है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर का कोई अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता अर्थात् उस कादर-करीम का अंत पाना नामुमकिन है।

वस्तुत: परमेश्वर सर्वोत्तम है। उसकी सृष्टि-रचना से पूर्व की स्थिति को गुरु साहिब ने अनेक उदाहरणों से समझाने का प्रयास किया है, ताकि जीव को यह समझ आ सके कि जीव-रचना से पूर्व पाप-पुण्य, अच्छाई-बुराई, मान-अपमान आदि का तनिक भी महत्त्व नहीं था। यह सब तो जीवों की उत्पत्ति के बाद ही मुमकिन हुआ। तब से जीवों को विविध कर्मों में लगाने वाला और फिर उनके मुताबिक फल देने वाला, करने-करवाने में समर्थ प्रभु खुद ही है। गुरबाणी में इस संदर्भ में अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं; जैसे :

आपे हुकमु चलाइदा जगु धंधै लाइआ ॥

(पन्ना ७८९)

अर्थात् प्रभु अपना ही हुक्म चलाता है और उसी ने सारे संसार को कर्म में लगा रखा है। परिपूर्ण परमात्मा सर्वकला समर्थ है। सर्वत्र उसी का हुक्म बज रहा है :

सभु तेरा चोजु वरतदा दुखु सुखु तुधु पासि ॥

(पन्ना ५४९)

प्रभु के चरणों में हर पल जीव की यही अरदास होनी चाहिए कि उसे सदैव कायम रहने वाला नाम-धन नसीब हो ताकि वह उसकी अपार रहमत का पात्र बन जाए। ❁

कविता

गांव

कहते उसको गांव।
सघन नीम की छांव।
निर्मल शांत तलैया।
फुदके सोन चिरैया।
शीतल मंद बयार।
आम्र सुरभि का भार।
कोयल की कूक।
प्रतिध्वनि तक मूक।
सोंधी-सोंधी माटी।
अति सुरम्य वन-घाटी।
पगडंडी में लहर।
ओस में डूबी सहर।
सरसों फूले खेत।
चंद्र-ज्योत्स्ना श्वेत।
मानव इन्हें न लीलो!
असली जीवन जी लो!

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.)। मो : ०९४११६०७६७२

ख़बरनामा

जत्थेदार अवतार सिंघ तख़्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब की प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष चुने गए

श्री अमृतसर : २० फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ को तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब की प्रबंधक कमेटी के हुए चुनाव में सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुन लिया गया।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अतिरिक्त सचिव एवं प्रवक्ता स. दिलजीत सिंघ ने बताया कि तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब की प्रबंधक कमेटी के पदाधिकारियों के हुए चुनाव में जत्थेदार अवतार सिंघ को अध्यक्ष, स. सलिंदर सिंघ को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, बीबी कमलजीत कौर को उपाध्यक्ष, स. सरजिंदर सिंघ को महासचिव तथा स. महिंदर सिंघ (छाबड़ा) को सचिव चुना गया है। स. दिलजीत सिंघ ने बताया कि अध्यक्ष चुने जाने के बाद जत्थेदार अवतार सिंघ तख़्त श्री हरिमंदर जी में नत्मस्तक हुए और सतिगुरु का शुक्राना अदा किया। तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी इकबाल सिंघ ने जत्थेदार अवतार सिंघ को गुरु-घर की बख़्शिश सिरोपा एवं शाल देकर सम्मानित किया। स. दिलजीत सिंघ ने बताया कि जत्थेदार अवतार सिंघ ने प्रबंधक कमेटी के सदस्यों एवं समूह पदाधिकारियों तथा संगत का धन्यवाद करते हुए गुरु-घर का अदना-सा सेवादार होने के नाते अपने जिम्मे लगी हर जिम्मेदारी को पूरी तनदेही से निभाने की बात कही है।

धार्मिक परीक्षा-२०१४ का परिणाम घोषित

श्री अमृतसर : १९ फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा नवंबर २०१४ में ली गई धार्मिक परीक्षा का परिणाम घोषित करते हुए सचिव स. सतबीर सिंघ ने बताया कि इस परीक्षा में ५३ हज़ार से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया था। इनमें से मेरिट में आने वाले १५०० विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दी जाएगी।

स. सतबीर सिंघ ने बताया कि प्रथम दर्जे में कुल २३३६९ विद्यार्थियों ने भाग लिया। इनमें से एस. के. डी. खालसा सीनियर सेकंडरी स्कूल, तुगलवाला (गुरदासपुर) की कक्षा ८ की छात्रा बीबा सत्यनारायण धर्माणी पुत्री श्री सुधीर कुमार तथा बीबी अनमोलप्रीत कौर पुत्री स. बलराज सिंघ ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। भगत पूरन सिंघ आदर्श हाई स्कूल, बुट्टर कलां (गुरदासपुर) की कक्षा ८ की छात्रा बीबा अमरजीत कौर पुत्री स. हरजीत सिंघ तथा नवयुग पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल, धरमकोट (मोगा) की कक्षा ८ की छात्रा बीबा जसप्रीत कौर पुत्री स. संतोख सिंघ ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। बाबा शाम सिंघ मेमोरियल सीनियर सेकंडरी स्कूल, फत्ते वाला (फ़िरोज़पुर) के कक्षा ७ के छात्र स. जुगराज सिंघ पुत्र स. दलीप सिंघ, संत ईशर सिंघ गुरमति अकादमी, चप्पड़ (पटियाला) की कक्षा ८ की छात्रा बीबा जशनप्रीत कौर

पुत्री स. गुरदीप सिंघ तथा एस. के. डी खालसा सीनियर सेकंडरी स्कूल, तुगलवाला (गुरदासपुर) के कक्षा ८ के छात्र स. सुरिंदर सिंघ पुत्र स. सुरजीत सिंघ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

उन्होंने बताया कि दूसरे दर्जे में कुल २४६४२ विद्यार्थियों ने भाग लिया। इनमें से श्री गुरु हरिक्रिशन सीनियर सेकंडरी स्कूल, पट्टी (तरनतारन) की कक्षा १२ की छात्रा बीबा जशनप्रीत कौर पुत्री स. गुरजिंदर सिंघ ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्री गुरु तेग बहादर सीनियर सेकंडरी स्कूल, जोगी चीमा (गुरदासपुर) की कक्षा १२ की छात्रा बीबा दलजीत कौर पुत्री स. प्रगट सिंघ तथा खालसा कॉलेज पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल, श्री अमृतसर की कक्षा १२ की छात्रा बीबा मनप्रीत कौर पुत्री स. अमरजीत सिंघ ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। श्री गुरु तेग बहादर सीनियर सेकंडरी स्कूल, जोगी चीमा (गुरदासपुर) की कक्षा ११ की छात्रा बीबा कंवलप्रीत कौर पुत्री स. कुलजीत सिंघ, खालसा सीनियर सेकंडरी स्कूल, गढ़दीवाला (होशियारपुर) की कक्षा १२ की छात्रा बीबा रीतकमल कौर पुत्री स. सेवा सिंघ तथा नवचेतन स्कूल खारा (गुरदासपुर) की कक्षा १० की छात्रा बीबा नवदीप कौर पुत्री स. दलेर सिंघ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

स. सतबीर सिंघ ने तीसरे दर्जे (स्नातक स्तर) के परिणाम के बारे में बताया कि इस दर्जे में ४६१९ विद्यार्थियों ने भाग लिया। इनमें से संत बाबा लाभ सिंघ बरकत गर्ल्स डिग्री कॉलेज, टल्लेवाल (बरनाला) की छात्रा बीबा जसप्रीत कौर पुत्री स. दरशन सिंघ ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। बरकत गर्ल्स कॉलेज ऑफ एजूकेशन, टल्लेवाल (बरनाला) की छात्रा बीबा अमनदीप कौर पुत्री स. गुरमेल सिंघ ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। शंति देवी आर्य महिला कॉलेज, दीनानगर (गुरदासपुर) की छात्रा बीबा कुलविंदर कौर पुत्री स. बलकार सिंघ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

चौथे दर्जे (स्नातकोत्त र स्तर) के परिणाम संबंधी उन्होंने बताया कि इस दर्जे में कुल ७७१ विद्यार्थियों ने भाग लिया। इनमें से गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर की छात्रा बीबा रणदीप कौर पुत्री स. प्रगट सिंघ ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। शांति देवी आर्य महिला कॉलेज, दीनानगर (गुरदासपुर) की छात्रा बीबा किरनदीप कौर पुत्री स. जसपाल सिंघ ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। सिक्ख नेशनल कॉलेज, कादियां (गुरदासपुर) की छात्रा बीबा दलजीत कौर पुत्री स. कुलदीप सिंघ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

स. सतबीर सिंघ ने बताया कि प्रत्येक दर्जे में से प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को क्रमश: ५१००, ४१०० तथा ३१०० रुपए विशेष इनाम के रूप में दिए जाएंगे। उन्होंने बताया कि मेरिट में आने वाले १५०० विद्यार्थियों को इस वर्ष ३१,५१,९०० रुपए छात्रवृत्ति के रूप में दिए जाएंगे। ❁

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०४-२०१५